ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 21 अक्टूबर 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 21 अक्टूबर 2018 से 27 अक्टूबर 2018

आश्विन शु. – 12 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 42, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2,00 रुपये

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री विनय आर्य के नेतृत्त्व में एक शिष्टमण्डल डी.ए.वी. समिति के मासिक यज्ञ में सम्मिलित हुआ

डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के मासिक यज्ञ में इस बार श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्त्व में एक शिष्टमण्डल सम्मिलित हुआ। श्री आर्य ने प्रधान जी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ बैठकर पवित्र यज्ञाग्नि में आहुतियाँ दीं। प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने श्री विनय आर्य एवं उनके साथियों का माल्यार्पण कर सम्मान किया। श्री विनय आर्य ने डी.ए.वी.कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति में इस वैदिक वातावरण को देखकर अपना सुखद आश्चर्य व्यक्त किया और प्रधान जी को इस अभूतपूर्व परम्परा के लिए हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद दिया। उन्होंने लगभग एक घंटे तक चले यज्ञ में समस्त पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की हार्दिक भागीदारी के लिए दिल से प्रशंसा की और विश्वास व्यक्त किया कि देशभर में फैली डी.ए.वी. संस्थाओं में इसका पूर्ण सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा।

श्री विनय आर्य ने दिल्ली में हो रहे 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' की जानकारी देते हुए प्रधान जी से सहभागिता की प्रार्थना की। मान्य प्रधान जी ने सम्मेलन की तिथियों में विदेश में अपने अपरिहार्य प्रवास का हवाला देते हुए कहा ''मेरा पूर्ण प्रयत्न रहेगा कि मैं उपस्थित रह सकूं लेकिन फिर भी यदि मैं न आ पाया तो मेरी ओर से इस सम्मेलन को लेकर संदेश अवश्य भेजा जायेगा।''

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का शारदुत्सव सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का 5 दिवसीय शरदुत्सव 3 अक्टूबर से 7 अक्टूबर, 2018 तक आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री एवं मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा के नेतृत्व में मनाया गया है। कार्यक्रम में वैदिक विद्वान श्री उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ सहित आर्यजगत् के प्रमुख भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक एवं पं. नरेश दत्त आर्य सम्मिलित हुए। यह विद्वान पांचों दिन अपने प्रवचनों व भजनों से सेवायें देते रहे। प्रथम चार दिन प्रातः व सायं दोनों समय यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ और समापन दिवस रविवार को प्रातः वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के ब्रह्मा संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी थे। यज्ञ में मंत्रोच्चार गुरुकुल पौंधा–देहरादून के दो ब्रह्मचारियों श्री ओमप्रकाश एवं श्री विनीत कुमार ने किया। आश्रम में पधारे अनेक दम्पति यज्ञ के यजमान बने। प्रतिदिन योग साधना एवं आसन का आयोजन यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा आशीर्वाद दिया जाता था।

इस अवसर पर तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव एंव महिला सम्मेलन का आयोजन भी हुआ। रात्रि के आयोजन में संगीत सन्ध्या का सफल आयोजन हुआ जिसमें श्रीमती मीनाक्षी पंवार, श्री नरेशदत्त आर्य तथा श्री पं. सत्यपाल पथिक आदि अनेक भजनोपदेशकों के गीत व भजन हुए।

दिनांक 6–10–2018 का प्रातःकालीन यज्ञ एवं सत्संग तपोवन की पहाड़ियों पर स्थित आश्रम की बृहद् एवं भव्य यज्ञशाला जहां महात्मा आनन्द स्वामी जी तप व साधना करते थे, आयोजित किया गया। महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा से अमृतसर के बावा गुरुमुख सिंह जी द्वारा स्थापित वैदिक साधना का प्रमुख केन्द्र है। आश्रम प्रधान ने बताया कि महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने अपने गृहस्थ जीवन व उसके बाद के वानप्रस्थ व संन्यास जीवन में अनेक बार यहां तपोवन, देहरादून के पर्वतीय, वनीय एवं निर्जन स्थान में आकर महीनों तक साधनायें की हैं। उन्होंने साधना के लिए इस स्थान को सर्वाधिक उपयुक्त पाया था।

दयानन्द महाविद्यालय अजमेर में अन्तराष्ट्रींय सेमीनार सम्पन्न

''रामायण सर्किट के विकास पर यदि दक्षिण एशिया के देश काम करें तो पर्यटन उद्योग इन देशों की अर्थव्यवस्था के लिए संजीवनी साबित हो सकता है। दक्षिण एशिया के अनेक देशों में रामायण महाभारत व शक्तिपीठ सहित अनेक ऐसे कारण विद्यमान है जो दक्षिण एशिया की ओर पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं", यह विचार दयानन्द महाविद्यालय अजमेर में आयोजित अन्तराष्ट्रीय सेमीनार में बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ जी.जी. सक्सेना ने व्यक्त किए। पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी तथा दिल्ली र्प्यटन निगम के सचिव रहे डॉ. सक्सेना ने बताया कि दक्षिण एशिया के सभी देशों में अनेक भौगोलिक राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्राकृतिक तत्त्व ऐसे है जो कि सभी देशों में समान हैं यदि उक्त इन तत्त्वों पर

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 21 अक्टूबर 2018 से 27 अक्टूबर 2018

हमें क्षमा करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इमामग्ने शरणिं मीमृषो नः, इममध्वानं यमगाम दूरात्।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भृमिरस्यृ मर्त्यानाम्।।

ऋग् 1.31.13

ऋषिः **हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अग्ने)** हे अग्रणी तेजस्वी परमात्मन्! **(नः)** हमारी **(इमां)** इस् **(शरणि)** [व्रतलोप रूप] हिंसा को **(मीमृषः)** क्षमा करो। **(इमं)** इस **(अध्वानं)** [भ्रांत] मार्ग के अवलम्बन को भी [क्षमा करो] **(यं)** जिस पर [हम] **(दूरात्)** दूर तक **(अगाम)** चल चुके हैं। [तुम] **(सोम्यानां)** सौम्य जनों के **(आपिः)** बन्धु, **(पिता)** पिता [और] **(प्रमातिः)** शुभचिन्तक [हो], **(मर्त्यानां)** मर्त्यों को **(भूमिः)** घुमानेवाले [और] **(ऋषिकृत्)** ऋषि बना देनेवाले **(असि)** हो।

अपने जीवन में हम अन्य हिंसाएँ करते हों या न करते हों, पर व्रत–लोपरूप आत्महिंसा तो निरन्तर करते रहते हैं। कभी हम सत्य–भाषण का व्रत लेते हैं, कभी नित्य सन्ध्या–वन्दन और अग्निहोत्र करने का व्रत लेते हैं, कभी नियमित व्यायामा और प्रातः भ्रमण का व्रत लेते हैं, कभी ब्रह्मचर्य–पालन का व्रत लेते हैं, कभी वेद के स्वाध्याय और प्रातः भ्रमण का व्रत लेते हैं, कभी ब्रह्मचर्य–पालन का व्रत लेते हैं, कभी वेद के स्वाध्याय का व्रत लेते है; पर शीघ्र ही इन ब्रतों को तोड़ भी देते हैं। हे परमात्मन्! तुम अग्नि हो, अग्रणी होकर सबका मार्ग–दर्शन करने वाले हो। हमारा भी मार्ग–दर्शन करो। तुम व्रत पति हो, हमें भी व्रतों पर दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करो। जो व्रत–भंगरूप हिंसा हम अब तक करते रहे हैं, उसके लिए हमें क्षमा करो।

व्रत–लोप के अतिरिक्त दूसरा अपराध हमने यह किया है कि हम अब तक भ्रांत राह पर चलते रहे, और उस भटकी राह पर चलते–चलते बहुत दूर निकल आये। अब यह देखकर हमारा सिर चकरा रहा है कि जितना गलत रास्ता हम पार कर चुके हैं, उससे वापिस लौटने के लिए हमें अनवरत कितना महान् प्रयास करना पड़ेगा। हे प्रकाशमय अग्निदेव! तुम्हीं प्रकाश देकर हमें उस कुमार्ग से वापिस लौटाओ। तुमसे दूर होकर जो हम भ्रांत पथ पर चल पड़े, उसके लिए भी तुम हमें क्षमा करो।

तुमसे क्षमा–याजना हम कारण नहीं कर रहे कि हम दंड से बचना चाहते हैं। हम जानते हैं कि दुष्कर्मों का दण्ड न देना रूप क्षमा तुम कभी नहीं करते हो। अतः तुम्हारे दण्ड का हम स्वागत करते हैं। व्रत–लोप और उन्मार्गगामिता का दुष्परिणाम हम पर्याप्त भोग चुके हैं और अब भी यदि कुछ भोग शेष है तो उसके लिए भी हम तैयार हैं। पर क्षमा–याजना हम भविष्य में उक्त अपराधों से बचने के लिए कर रहे हैं। क्षमा नही माँगता है जो अपने अपराध को स्वीकार करता है और उस अपराध से भविष्य में बचे रहने की जिसके मन में उत्कट चाह होती है। उसी मनोवृत्ति के के साथ हम तुम्हारे सम्मुख उपस्थिति होकर क्षमाप्रार्थी हो रहे हैं।

हे प्रभु! तुम सौम्यजनों के बन्धु, पिता और हितचिन्तक हो। तुम्हारी कृपा से हम भी सौम्य बन जाएँ। तुम 'भूमि' और 'ऋषिकृत्' हो। जैसे कुम्भकार मिट्टी को चाक पर घुमाकर उत्तमोत्तम पात्रों के रूप में परिणत कर देता है, वैसे ही तुम अपने दिव्य चक्र पर घुमाकर सामान्य मर्त्य को भी ऋषि बना देते हैं। हे देव! तुम हम पर भी अपनी कृपा बरसाओ, हम मर्त्यों को भी ऋषि बना दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में स्वाजी ने एक कथा के माध्यम से बताया कि संसार वह भयानक जंगल है। इसमें रोग, शोक, अग्नि, भूकम्प, बाढ़ और लड़ाई–झगड़े के पशु घूमते फिरते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सर्प रेंगते हैं। इसमें वह भयानक स्त्री है, जिसे बुढ़ापा कहते हैं। मनुष्य जीवन की जिस शाखा से चिपटा है उसे दिन और रात्रि के श्वेत और काले चूहे काट रहे हैं। स्वयं वृक्ष को भी छः ऋतुओं वाला वर्ष हाथी बनकर धक्के मार रहा है। नीचे भयानक सर्प के रूप में मृत्यु प्रतीक्षा कर रही है। इन सबको भूलकर यह अभागा मनुष्य आशा और निराशा के शहद की मिठास में खो गया है। नीचे की मृत्यु और ऊपर का महानाश उसे दृष्टिगोचर नहीं होते।

अब आगे ...

आने वाले दिनों में जो बात मैं आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ उसका विषय है, ''शंकराचार्य और ऋषि दयानन्द की आध्यात्मिक कथा।'' वे दोनों सन्यासी थे। दोनों सत्य की खोज में घर से निकले। दोनों ने छोटी आयु में घर के सुख को त्याग दिया। दोनों ने विवाह नहीं कराया। दोनों ने अपने–अपने समय की आवश्यकता को पूरा किया। शंकर जब उत्पन्न हुए तो चारों ओर घोर नास्तिकता और वाममार्ग फैल रहा था। इनसे लड़ने के लिए उन्होंने देश–भर का भ्रमण किया। स्थान–स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किये। उपनिषदों के भाष्य लिखे, कई अन्य ग्रन्थ भी लिखे। महर्षि दयानन्द ने भी संन्यास लेकर तप किया। ओखी मठ, जोशी मठ, उत्तर काशी और गंगोत्तरी में पहुँचकर पहाड़ों की गुफाओं में, नदियों के किनारे, घनघोर जंगलों में इतना घोर तप किया उन्होंने कि एक महान् ज्योति उनके हृदय में जाग उठी। तिब्बत की सीमा के उस पार गंगोत्तरी के रास्ते में भारत का अन्तिम ग्राम है घराली। वहाँ के नम्बरदार ठाकुर नारायण सिंह ने मुझे बताया कि उनके पिता ठाकुर शिवसिंह ने स्वामी दयानन्द को देखा था। घराली के निकट ही गंगा के किनारे एक गुफा में वे रहते थे। उस गुफा में मैं गया। महर्षि ने वहाँ कई–कई मास की समाधि लगाई। कितना घोर तप था वह! शंकराचार्य ने भी तप किया, दोनों ने विद्या प्राप्त की। दोनों ने नास्तिकता के विरुद्ध प्रचार किया। दोनों ने हिमालय से कन्याकुमारी तक देश की बार–बार यात्रा की। दोनों ने वेद–प्रचार और वाममार्ग के संहार के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया।

यही नहीं, दोनों के जीवन में और भी कितनी ही एक–जैसी बातें हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य केवल 10 वर्ष कार्य कर सके। 22 वर्ष की आयु में कार्य आरम्भ किया, 32 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। महर्षि दयानन्द को भी कार्य करने के लिए लगभग इतना ही समय मिला। जगद्गुरु शंकराचार्य की मृत्यु विष से हुई। दो जैनी साधु उनके शिष्य बने। उनके मन में पाप था। अवसर पाकर विश्वासघात किया। उन्होंने शंकराचार्य को विष दे दिया। छः मास वे विष की अग्नि से लड़ते रहे। अन्त में चल बसे।

महर्षि दयानन्द को भी जोधपुर में विष दिया गया। एक बार नहीं बार–बार उन्हें समाप्त करने का यत्न किया गया। प्रयत्न करने वाले वे लोग थे जिनकी दुकानदारी को महर्षि दयानन्द समाप्त किये देते थे। अन्तिम बार का विष बहुत भयानक था। महर्षि का सारा शरीर छलनी हो गया। पर्याप्त समय तक सम्मुख करने के पश्चात् एक दिन वे चल बसे। शंकर ने वेद का प्रसार किया, दयानन्द ने भी। शंकर ने भी शास्त्रार्थ किये, दयानन्द ने भी। शंकर ने भी थोड़े–से समय में कितनी पुस्तकें लिख डाली, दयानन्द ने भी। एक आश्चर्य जनक समानता उनके जीवन में मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि बारह सौ वर्ष पहले के शंकराचार्य अपने समय के दयानन्द थे और डेढ़ सौ वर्ष पहले के दयानन्द अपने समय के शंकराचार्य। अपने–अपने समय पर अपनी–अपनी बुद्धि से उन्होंने उन समस्याओं को सुलझाया जो देश और मानवों कें समक्ष थीं। श्ंकार के समय में नास्तिकता और वाममार्ग के साथ लड़ने की आवश्यकता थी, वे लड़े। दयानन्द के समय नास्तिकता और वाममार्ग के साथ–साथ विदेशी सभ्यता का भी आक्रमण हो रहा था। वे तीनों के विरुद्ध लड़े।

और वास्तविकता यह है कि पाँच सहस्त्र वर्ष पहले की बात हो यह ढाई सहस्त्र वर्ष पूर्व की, बारह सौ वर्ष पहले की बात हो या डेढ़ सौ वर्ष पूर्व की, यह लड़ाई

कभी रुकती नहीं। उस समय भी दुनिया दु:खी थी, आज भी दु:खी है। आज किसी भी घर में, परिवार में, प्रान्त में या देश में जाकर किसी से पूछिये, क्या कोई सुखी है? क्या कोई छाती पर हाथ रखकर यह कह सकता है, मुझे कोई चिन्ता नहीं, कोई भय नहीं? पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व महात्मा विदुर ने कहा था, ''दुनिया भय, लोभ और क्रोध से पागल हुई जाती है।'' क्या आज भी वही बात दृष्टिगोचर नहीं होती? अमरीका रूस से डरता है, रूस अमरीका से। अमरीका लोभ करता है संयुक्त देश मेरे साथ मिल जाये; रूस लोभ करता है मेरे साथ सम्मिलित हो जायें। लोभ पूरा नहीं होता और आज तक कभी किसी का हुआ नहीं। तब क्रोध जाग उठता है। सब लोग मार्ग पर दौड़े जाते हैं, यह समझकर कि सुख मिलेगा, परन्तु सुख है कहाँ? सुख तो आत्मा को समझाने और जानने में है। शरीर का रोग कोई रोग नहीं। सबसे बड़ा रोग है आत्मा को भूल जाना, परन्तु दुनिया समझ बैठी है कि शरीर में सब–कुछ है। यह नहीं समझा कि शरीर तो माया है, पाँच तत्त्व का पुतला, एक मशीन। चलती अवश्य है, परन्तु उसे चलाता कौन है? इसके अन्दर आत्मा न हो तो हज़ार प्रयत्न कीजिये, वह चलती नहीं। संसार भी एक मशीन है। इसे चलानेवाला परमात्मा है। वह न हो तो मशीन कुछ भी नहीं।

आप किसी के पिता हैं, किसी के पुत्र हैं, किसी के भाई हैं, मजिस्ट्रेट हैं, जज हैं, मन्त्री हैं, व्यापारी हैं, परन्तु तब तक जब तक आत्मा शरीर के अन्दर है। यह निकल जाये तो फिर कुछ भी नहीं। कैलास की यात्रा के लिए जाते समय तिब्बत में मैंने देखा, कहीं कोई वृक्ष नहीं। अपने पथ–प्रदर्शक कीचखम्बा से मैंने पूछा, ''यहाँ मुर्दे का क्या करते हैं?'' वह बोला, ''बताऊँगा दूसरे दिन।'' एक ऊँचे टीले के ऊपर एक कमरे का एक मकान बना हुआ था। कीचखम्बा ने बताया, ''यह है श्मशान। इस मकान में पुजारी रहते है। कोई मर जाये तो रिश्तेदार लाश को यहाँ ले आते हैं। पुजारी तलवार से उसके टुकड़े–टुकड़े कर देते हैं, तब शंख बजाते हैं। शंख की ध्वनि सुनकर हज़ारों मांस–भक्षी पक्षी आते हैं। थोड़ी ही देर में वे सब टुकड़ों को खा जाते हैं।'' यह है शरीर का मूल्य! जिसके कारण शरीर का मान है उसे दुनिया भूल गई, केवल शरीर को पालना आरम्भ कर दिया उसने। शरीर को खाना खिलाया उसने, आत्मा को नहीं। अरे याद रखो! जब तक आत्मा भूखी है तब तक हज़ार योजनाएँ बनाओ, शन्ति नहीं होगी। मैं यह नहीं कहता कि शरीर की चिन्ता न करो। शरीर तो आत्मा की मोटर है। इसमें तेल अवश्य डालो ताकि यह चलती रहे, परन्तु जो मोटर को चलाता है उसकी भी तो चिन्ता करो! उसे खिलाओगे नहीं, उसे भूखा मारोगे तो इस मोटर का क्या लाभ होगा? तुम्हें पतलून की चिन्ता है, फटे हुए अन्त:करण की चिन्ता नहीं? बाहरवाले को सजाये चले जा रहे हो। अरे, अन्दरवाले को भी तो सजाओ! वास्तविकता वह है, बाहर की प्रदर्शनी नहीं।

अन्दरवाले को जगद्गुरु शंकराचार्य ने देखा, स्वामी दयानन्द ने देखा। लोग समझते हैं, उनके सिद्धान्त अलग हैं, ऐसी बात नहीं है। दोनों का एक सन्देश है और वह यह कि आत्मा को जगाये बिना कार्य नहीं चलेगा। श्री शंकर ने अपने सारे ज्ञान का निचोड़ उस ग्रन्थ में लिखा है, जिस ग्रन्थ का नाम उन्होंने 'विवेक चूड़ामणि' रखा। महर्षि दयानन्द ने अपने ज्ञान का निचोड़ 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' और 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा है। 'विवेक चूड़ामणि' में श्री शंकर कहते हैं, एक दु:खी गृहस्थ ने रोते हुए कहा–इस भयानक संसार में पार जाने का मार्ग क्या है? ज्ञानी ने उत्तर दिया, ''रो नहीं, घबरा नहीं। मार्ग है। उस पर जाने के उपाय हैं चार–श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान और योग।'' महर्षि ने भी 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' के उपासना काण्ड में इन्हीं चार बातों का वर्णन किया–श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान और योग। श्री शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र का भाष्य किया है, जिसका पहला सूत्र है–

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा

अब ब्रह्म की खोज आरम्भ होगी। और इसके साथ ही लिखा–ब्रह्म की खोज आरम्भ करने से पूर्व चार वस्तुओं का होना आवश्यक है। पहली यह कि जो व्यक्ति खोज करना चाहता है उसे आत्मा और अनात्मा का पता हो। दूसरी यह कि वह लोक और परलोक के लोभ से वैरागी हो गया हो। तीसरी यह कि उसके पास छ: प्रकार की सम्पत्ति हो और चौथी यह कि उसके अन्दर मुक्ति पाने की इच्छा हो। यह छ: प्रकार की सम्पत्ति है– शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान। महर्षि दयानन्द ने इन्हीं चार बातों की चर्चा 'सत्यार्थप्रकाश' में की है। सबसे पहली बात को कहते हैं विवेक। यह जानना कि जड़ क्या है और आत्मा क्या है? यह शरीर जड़ है; जिसके कारण इसके अन्दर जीवन है वह आत्मा है। शरीर का नाश होने से आत्मा का नाश नहीं होता। पाँव की हड्डी टूटती है तो आत्मा की हड्डी नहीं टूटती। शरीर का गला कटता है तो आत्मा का गला नहीं कटता। स्वामी रामतीर्थ जी ने ठीक कहा है–

खंजर की क्या मजाल कि इक ज़ख़्म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू।।

इस बात को जाननेवालो हक़ीक़त ने कहा–

काट सकते हो तो बाहर को हक़ीक़त काटो।
काटती अरूल हक़ीक़त को यह तलवार नहीं।।

इस बात को जाननेवाले भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को कहा, ''यह आत्मा कटता नहीं, जलता नहीं, सूखता नहीं, डूबता नहीं।'' यह है विवेक, यथार्थ ज्ञान। इस बात को समझना कि आत्मा क्या है, जड़ क्या है।

दूसरी बात को कहते हैं वैराग्य–प्रत्येक प्रकार के फल की इच्छा को त्याग देना, निष्काम भाव से कर्म करते जाना। आजकल तो निष्काम कर्म का अर्थ ही लोग समझ नहीं पाते। लोग सेवा भी करते हैं तो वोट प्राप्त करने के लिए। जहाँ वोट मिलने की आशा न हो, वहाँ उनका सेवा करने को ही जी नहीं चाहता। परन्तु आत्मा की खोज करनी हो तो केवल इस लोक के ही नहीं, परलोक के लोभ को भी त्यागना पड़ता है।

तीसरी बात को कहते हैं षट् सम्पत्ति–छ: प्रकार की सम्पत्ति। इनमें पहले प्रकार की सम्पत्ति है शम–प्रत्येक दशा में शान्त रहो। संसार तो शान्त नहीं है। हर ओर उथल–पुथल मच रही है। कितने ही उतार–चढ़ाव होते हैं। बाढ़ें आती हैं, भूकम्प आते है; गाँव उजड़ते हैं, शहर नष्ट होते हैं, बच्चे अनाथ होते हैं, विनाश नाच उठता है। इन सब के होते हुए शान्त रहना–यह है शम। तुम्हारे शान्त होने से संसार बदलेगा नहीं। इसी प्रकार चलता जायेगा। विचारकर देखो, यह संसार क्यों बना? इसलिए कि लोग अपने किये कर्मों का फल भोग सकें। नये और उत्तम कर्म करके ईश्वर के पास पहुँच सकें। ऐसी दुनिया में पूर्ण शान्ति मिलेगी कैसे? भगवान् राम को चौदह वर्ष जंगलों में भटकना पड़ा। भगवती सीता को भी रावण की कैद में जाना पड़ा। जब तक शरीर है तब तक सुख और दु:ख, पाप और पुण्य, रोग और शोक सबको रहना है। यदि दु:ख का अन्त चाहते हो तो केवल एक ही रास्ता है कि अपने कर्म को करते जाओ–शान्त रहो। एक कवि ने कहा था–

या खून पसीना करके बहा, या तान के चादर सोता जा।
यह नाव तो चलती जायेगी, तू हँसता रह या रोता जा।।

तुम्हारे हँसने या रोने से संसार बदलेगा नहीं। केवल अपना कर्त्तव्य पूरा करो और शान्त रहो। इन जलती हुई ज्वालाओं में, दहकते हुए ज्वालामुखियों में डोलने दो संसार का जहाज़। तुम अडोल होकर बैठे रहो। यह है शम, छ: सम्पत्तियों में से एक सम्पत्ति। शेष सम्पत्तियों की बात अगले भाषण में बताऊँगा।

ओ३म् शम्!

पाठक कृपया ध्यान दें

पिछले अंक में पृष्ठ 3 पर डॉ. भवानीलाल भारतीय : विनम्र श्रद्धाञ्जलि' शीर्षक से एक लेख छपा था जिसके लेखक आर्य समाज के मूर्धन्य लेखक डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री हैं। कृपया इसका संज्ञान लें–संपादक

☞ पृष्ठ 01 का शेष

दयानन्द महाविद्यालय अजमेर ...

सकारात्मक रूप से कार्य किया जाए तो दक्षिण एशिया के देशों की अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन उद्योग मील का पत्थर साबित हो सकता है।

"एक्सप्लोरिंग कान्टेक्ट ऑफ टूयूरिज़म एण्ड हैरिटेज इन साउथ ऐशिया" विषय पर बोलते हुए डॉ. सक्सेना ने बताया कि दक्षिण एशिया के देशों में पर्यटन उद्योग के लिए आधारभूत संसाधनों की कमी, पर्यटकों की सुरक्षा, हैल्थ व हाईजिन, राजनैतिक इच्छाशक्ति, मिलकर काम करने का मन:स्थिति, पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप, यातायात साधनों का विकास, होटलों का विकास, मार्केटिंग की एकल खिड़की की कमी, स्वस्थ वातावरण, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, करप्रणाली सहित अनेक मुद्दे हैं जिन पर दक्षिण एशिया के देशों को मिल कर काम करने की ज़रूरत है वहीं इन देशों में कई समानताएँ भी हैं जो कि पर्यटन के विकास हेतु सकारात्मक हैं। रामायण सर्किट, महाभारत सर्किट, मेडिकल पर्यटन, सस्ता खाना व रहना, सस्ते बाज़ार तथा प्राकृतिक व ऐतिहासिक धार्मिक कारण जो इन देशों के आपस में जुड़ाव को दर्शाते हैं उनका भरपूर उपयोग कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

बीजवक्ता प्रो. संजय के भारद्वाज ने दक्षिण ऐशिया में पर्यटन विकास के कई मानकों को विस्तार से बताया। सेन्टर ऑफ साउथ एशिया स्टडी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली से आए डॉ. भारद्वाज ने दिनरात पर्यटन के उद्योग के तेज़ी से बढ़ने की बात की।

इस अवसर पर वाराणसी के पधारे डॉ. जी.एस. राठौड़, डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर के उपाचार्य डॉ. एस.एन. जोशी डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर के प्राचार्य डॉ. अनूप कुमार ने अपने विचार रखे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. लक्ष्मीकांत ने अतिथियों का स्वागत किया व परिचय करवाया। उक्त संगोष्ठी में देश विदेश से 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। महाविद्यालय उपाचार्य डॉ. मृत्युन्ज कुमार सिंह ने सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्त्री और यज्ञोपवीत

● **पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय**

सम्वत् 1961 के कार्तिक मास (सन् 1904 का नवम्बर) में एक दिन प्रातःकाल आर्य नर–नारियों का मेरे घर में समारोह आरम्भ हुआ। सब के मुखों पर उल्लास, उत्साह, मनों में आनन्द और एक नए प्रकार का औत्सुक्य था। नहटौर के चौधरी शेरसिंह, नगीने के बाबू हरलाल जो आर्य समाज बिजनौर के संचालकों के प्रमुख समझे जाते थे। बाबू जियालाल एक होनहार नवयुवक, पंडित जयनारायण आदि सभी सज्जन आ उपस्थित हुए। उनके परिवार ने भी आने की कृपा की। आर्य समाज के बाहर के भी लोग थे।

मैं बिजनौर में तीन चार मास पहले ही आया था। अपरिचित और अज्ञात। कोई पोजीशन भी नहीं। हाईस्कूल का एक साधारण थर्ड मास्टर। घर भी बहुत छोटा। बिजनौर की तहसील के निकट एक छोटी–सी गली में। एक पक्का छोटा–सा कमरा। सामने दालान और कच्चा आँगन जिसमें मकान के स्वामी लाला भगवानदास की गाय भी बँधा करती थी। थोड़ी देर में मकान भर गया। केवल एक सज्जन नहीं आए। वे थे बाबू धरणीधर दास, बिजनौर के इन्जीनियर और बिजनौर आर्यसमाज के प्रधान। यह आवश्यक न था कि वे मेरे घर पर आते ही। परन्तु नोट करने की विशेष बात यह थी कि जिस कारण से और लोग आए उसी कारण से वह न आ सके।

मैं अभी गौना करके लाया था। विवाह के ठीक पाँच वर्ष पीछे। उस समय मेरे मन में एक प्रश्न उठा। मेरा यज्ञोपवीत हो चुका है। मैं द्विज हूँ। मेरी पत्नी का यज्ञोपवीत नहीं हुआ। अतः वह शूद्र हैं। आर्यसमाज और वैदिक संस्कृति के अनुसार द्विज और शूद्र की यही पहचान है, द्विज और शूद्र की सन्तान तो वर्णसङ्कर ही होगी। अतः क्यों न स्त्री का भी उपनयन संस्कार करके द्विज बनाया जाए।

स्वामी दयानन्द से पूर्व ब्राह्मणों को छोड़कर अन्य किसी जाति में यज्ञोपवीत की प्रथा न थी। ब्राह्मणों में भी स्त्रियाँ अनुपनीत ही रहती थीं। स्मृतियों में उपनीता और अनुपनीता स्त्रियों का कहीं–कहीं उल्लेख है। परन्तु हिन्दू ब्राह्मण स्त्री और शूद्र को एक कोटि में रखकर न स्त्री को यज्ञोपवीत देता, न वेद पढ़ाता, न गायत्री का जाप करने देता। ऋषि दयानन्द ने यह परिपाटी तोड़ी और अन्य जातियों में भी यज्ञोपवीत होने लगे। इलाहबाद के प्रसिद्ध नागरिक मुंशी कालीप्रसाद जी ने कायस्थों को द्विज बनाने का आन्दोलन चलाया। उन्होंने सिद्ध किया कि कायस्थ क्षत्रिय हैं उनको यज्ञोपवीत का अधिकार है। जब मैं इलाहबाद में पढ़ाता था तो एक बार श्रावणी पर कुछ कायस्थ सज्जन मुझे निमन्त्रण देने आए। शायद त्रिवेणी पर कायस्थों को जनेऊ पहनाना था। मैंने कहा ''मैं तो जन्म से जाति मानता नहीं। कायस्थ क्षत्रिय भी हो सकता है, ब्राह्मण भी, वैश्य भी और शूद्र भी। जनेऊ कराइए परन्तु जन्म के आधार पर नहीं।''

आर्यसमाज में यज्ञोपवीत की प्रथा चल पड़ी। परन्तु स्त्रियों के लिऐ नहीं। कम से कम बिजनौर और हमारे इस प्रान्त के लिए तो सर्वथा यह नई बात थी। मेरे घर में मेरे पिता का भी यज्ञोपवीत नहीं हुआ था और न मेरी माता का। अतः मेरे वर्णसङ्कर होने का तो प्रश्न ही न था। हाँ जन्म से मुझे शूद्र कह सकते हैं, और यह तो स्मृतियों में भी लिखा है कि–

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्
द्विज उच्यते।

अतः मैं समस्त मनुष्यों के समान जन्म से शूद्र था। संस्कार से मुझे द्विज बना लिया गया था। वही संस्कार मैं अपनी पत्नी का कराना चाहता था।

नवयुवकों को नई बात प्यारी लगती है। वृद्ध सोच–विचार में पड़ जाते हैं। उनको चालू सड़क पर चलना ही अच्छा लगता है। यही कारण था कि मेरी पत्नी के यज्ञोपवीत संस्कार में भीड़ लग गई। नई बात थी। मेरे घर वालों के लिए भी। घर में था ही और कौन? केवल मेरी माता जी। उनको भी उत्सुकता थी। पत्नी को भी। दूसरों को भी कि स्त्रियों के जनेऊ में क्या होता है। स्त्री जनेऊ पहन कर कैसी लगती है, इत्यादि इत्यादि!

संस्कार आरम्भ हुआ। आचार्य का काम पं. चतुर्भुज ने कराया जो समाज के उपप्रधान और किसी दफ्तर में हैडक्लर्क थे यथानाम तथा गुण। मेरी पत्नी उपनीता हो गईं। अब वह द्विजों की श्रेणी में आ गईं। बात नगर भर में फैल गई। किसने क्या टिप्पणी की, ज्ञात नहीं। तमाशा अच्छा रहा।

परन्तु अगले सप्ताह लाहौर के अंगरेजी समाचार–साप्ताहिक 'आर्य पत्रिका' में धरणीधर बाबू की ओर से एक लेख निकला, जिसका आशय यह था कि आर्यसमाज बिजनौर के एक कायस्थ सभासद ने अपनी स्त्री का यज्ञोपवीत संस्कार कराया है। यह अनुचित जान पड़ता है। स्त्रियाँ प्रति मास रजस्वला होती हैं। वे यज्ञोपवीत को पवित्र नहीं रख सकतीं। इत्यादि।

लोग समाचार पत्र मेरे पास लाए। मैंने एक लम्बा–सा लेख लिखा। अंगरेजी में लेख लिखने का मुझे अधिक अभ्यास नहीं था। प्रयाग से एक दो लेख आर्य पत्रिका को लिखे थे। लेख छपा। मैंने उसमें प्रमाणों सहित सिद्ध किया कि–

(1) ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों का यज्ञोपवीत शास्त्रोक्त माना है

(2) पुरानी स्मृतियों में भी इसका उल्लेख मिलता है।

(3) बाणभट्ट की कादम्बरी में भी लिखा है देवी 'महाश्वेता' यज्ञोपवीत पहने थी।

अयुग्मलोचनसकाशात् प्रसादलब्धेन चूड़ामणिचन्द्रमयूख जालेन मण्डलीकृतेन ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकायाम्।

(4) सोलह संस्कार स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान हैं।

(5) स्त्री का रजस्वला होना यज्ञोपवीत का बाधक नहीं है। पुरुष भी तो शौचादि जाते तथा कई इस प्रकार के काम करते हैं जिनको अशुद्ध कहा जा सकता है।

इस लेख की मित्र–मण्डल में धूम मच गई मेरी प्रतिष्ठा को चार चाँद लग गए। मैं समाज का मंत्री हो गया । श्री धरणीधर बाबू ने समाज में आना छोड़ दिया। इसके कुछ अन्य कारण भी थे जिनमें मैं आज सोचता हूँ कि समाजवालों की गलती थी। क्योंकि श्री धरणीधर दास जी पहले बंगाली थे जिनको आर्यसमाज से हित था। वे सदाचारी, धर्मनिष्ठ और संस्कृति–प्रिय वृद्ध पुरुष थे। वे थे कायस्थ और बंगाली कायस्थों को खुल्लम खुल्ला शूद्र समझा जाता था। बंगाल में आर्यसमाज का प्रभाव भी शून्य के ही बराबर था।

यद्यपि ऋषि दयानन्द ने अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि स्त्री और पुरुष के सामाजिक अधिकार समान हैं, परन्तु स्त्रियों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने में बहुत देर लगी है। एक–एक इंच पर विरोध का सामना करना पड़ा है। यह विरोध अब भी सर्वथा नष्ट नहीं हो गया। किसी न किसी रूप में प्रकट हो ही जाता है। अंगरेजी की कहावत है–

Superstitions die hard. अर्थात् अन्धविश्वास कठिनता से जाते हैं। सन् 1904 से लेकर 1917 तक बिजनौर में किसी अन्य स्त्री का यज्ञोपवीत नहीं हुआ। 1917 में प. जयनारायण जी को अपनी कन्या चन्द्रावती को यज्ञोपवीत देने की इच्छा हुई। उन दिनों मैं प्रतापगढ़ हाईस्कूल में टीचर था। उन्होंने मुझे निमन्त्रण देते हुऐ लिखा कि 13 वर्ष पूर्व तुम्हीं ने स्त्रियों के यज्ञोपवीत की प्रथा आरम्भ की थी। अब तुम्हीं आओ और मेरी पुत्री का यज्ञोपवीत कराओ। फलतः मैं बिजनौर गया और अपने मित्र की पुत्री का यज्ञोपवीत कराया। मुझे हर्ष है कि वह कन्या आज 'चन्द्रावती लखनपाल' नाम से प्रसिद्ध हैं। और भारतीय संसद् की एक सुयोग्य सदस्या (एम.पी.) हैं।

इलाहाबाद में मैं 1918 में दयानन्द हाईस्कूल का हैडमास्टर होकर आया तो मेरी पुत्री सुदक्षिणा की आयु 8 वर्ष की थी। थोड़े ही दिन पीछे मैंने उस पुत्री का यज्ञोपवीत कराया था। उस दिन भी आर्य भाई बहनों की भीड़ लग गई थी। क्योंकि प्रयाग में उस समय तक लड़कियों के यज्ञोपवीत की प्रथा नहीं पड़ी थी। मुझे सन्तोष है कि मेरी पुत्र–वधुओं का भी यज्ञोपवीत हो गया है। परन्तु विवाह से पूर्व नहीं।

परन्तु अब एक प्रतिक्रिया देखने में आ रही है। शिक्षित आर्य युवक भी यज्ञोपवीत के महत्त्व पर श्रद्धा नहीं रखते और यह रोग शिक्षित महिलाओं में भी घर करता जाता है। यह तो ठीक है कि **'न लिङ्ग धर्मकारणम्'** अर्थात् केवल जनेऊ पहनने से कोई ऐसे ही धर्मात्मा नहीं बन जाता। सूत के तीन धागे तो सूत ही हैं। उनमें कोई ऐसी नैसर्गिक शक्ति नहीं जो उनके पहनने वाले को बलात् पुण्यात्मा बना सके। परन्तु संस्कारों की अपनी विशेष महत्ता और पवित्रता है इनका लाभ है। यह कुप्रथाओं को रोकने में सहायक होते हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षा में यज्ञोपवीत संस्कार का बड़ा महत्त्व रहा है। यज्ञोपवीत है तो लिङ्ग मात्र ही। और वह धर्म का कारण भी नहीं। तथापि वह धर्म का प्रेरक और मान मर्यादा का रक्षक है। आज उच्च और नीच, शिक्षित और अशिक्षित में भेद करने के लिऐ अनेक प्रकार के बाह्य लिङ्ग स्थापित किऐ जाते हैं जो आडम्बरपूर्ण हैं। यज्ञोपवीत जैसे सरल, सुगम, आडम्बर–शून्य आवश्यक लिङ्ग की प्रथा चलाना प्राचीन ऋषियों के उच्च विचार और सरल जीवन की सूचना देता है। हमारे जिन कई प्रसिद्ध नेताओं ने कुछ कल्पित आधारों पर जनेऊ तोड़ डाले और नवयुवकों के समक्ष एक नया उदाहरण रखा वह सब विदेशीय विचारों के प्रसारण का फल था। हम को इस पर गंभीरता से विचार करना है। सुधार करना है, परन्तु ऐसा सुधार कि अनिष्ट घास कट जाए इष्ट पौधे उखड़ने न पाएँ। बाग उजड़ जाए तो 'निराने' का क्या लाभ।

(जीवनचक्र, पृ0.68)

प्रस्तुति डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

सिक्ता निवावरी

● शिवनारायण उपाध्याय

सिक्ता निवावरी की ऋषिका है। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 की ऋचा संख्या 11–20 तक की यह दृष्टा है। इन ऋचाओं में ईश्वर की उपासना, कर्मफल, स्वर्ग, सदाचार और कर्मयोग पर विचार किया गया है।

अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवशतधारो विचक्षणः।

हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धु भर्वृष।।

ऋ.9.86.11

अर्थ– परमात्मा **(अभिक्रन्दन्)** स्व सत्ता से गुर्जता हुआ **(कलशं)** इस ब्रह्माण्ड को **(वाज्यर्षति)** गति देने वाला है। और **(दिवः)** द्युलोक का **(पतिः)** स्वामी है। तथा **(शतधारः)** अनन्त प्रकार के आनन्दों का स्रोत है। तथा **(विचक्षणः)** सर्व दृष्टा और **(हरिः)** सब शक्तियों को स्वाधीन रखने वाला है। **(मित्रस्य)** प्रेमपात्र लोगों के **(सदने)** अन्तः करणों में **(सीदति)** विराजमान होता है। तथा **(मर्मृजानः)** सब को शुद्ध करता हुआ **(अविभिः सिन्धुभिः)** वह कृपासिन्धु **(वृषा)** अपनी कृपा रूप वृष्टि से सबको सिञ्चित करता है।

भावार्थ– परमात्मा ही इस ब्रह्माण्ड को गति देता है तथा वही इसका स्वामी है। परमात्मा ही नाना प्रकार के आनन्द का प्रदाता है। वह सर्वव्यापक, सर्वनियन्ता और प्राणियों के कर्मों का फल देने वाला है। सर्व व्यापक होने से वह अन्तः करण में भी निवास करता है। वही समय पर जल वृष्टि कर सृष्टि को हरा–भरा कर देता है।

अग्ने सिन्धूनां पवमानो अर्वत्यग्रे वाचो अग्रियो गच्छति।

अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः स्रोतृभिः पूयते वृषां।। ऋ.9.86.12

अर्थ– जो परमात्मा **(वाचोऽग्रियः)** वेद रूपी वाणियों का मुख्य कारण है। **(गोषु)** अपनी सत्ता से लोक–लोकान्तरों में **(गच्छति)** प्राप्त है। **(सिन्धुनाम्)** प्रकृति की वाष्प रूप अवस्था से **(अग्रे)** पहले **(पवमानः)** पवित्र करता हुआ **(अर्षति)** सर्वत्र प्राप्त है। ऐसे परमात्मा को उपासक **(वाजस्याग्रे)** धनादि ऐश्वर्यों से पहले **(महाधनं)** महाधन रूप उक्त परमात्मा को **(भजते)** सेवन करता है। ऐसे उपासक को **(स्वायुधः)** अनन्त प्रकार की शक्ति वाला **(सोतृभिः)** अपनी संस्कृत करने वाली शक्तियों द्वारा **(वृषा)** बल स्वरूप परमात्मा **(पूयते)** पवित्र करता है।

भावार्थ– परमात्मा पंचतन्मात्राओं के आदि कारण अहंकार और महत्त्व ही नहीं वरन् प्रकृति से भी पहले विराजमान था। उसी ने इस सृष्टि का निर्माण किया है। वह सर्वव्यापक है। परमात्मा अपने उपासक को सब तरह से पवित्र करता है।

अगली ऋचा में परमात्मा को कर्मफल प्रदान कहा गया है–

अयं मतवाञ्छकुनो यथाहितोऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा।

तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोमइन्दते।।

ऋ.9.86.13

अर्थ– (इन्द) हे कर्मयोगिन् **(ते)** तुम्हारे लिए **(शुचि)** शुद्ध स्वरूप **(सोमः)** परमात्मा **(पवते)** पवित्रता देने वाला है। **(कवे)** हे व्याख्यातः। **(तव क्रत्वा धिया)** तुम्हारे सुन्दर कर्मों के द्वारा **(रोदसी अन्तरा)** इस ब्रह्माण्ड में तुम्हें शुभ फल देता है और **(अयं मतवान्)** यह सर्वत्र परमात्मा **(शकुनो, यथा)** जिस प्रकार विद्युत **(हितः)** द्वितकर होकर **(अव्ये)** रक्षा युक्त पदार्थ में **(ससार)** प्रविष्ट हो जाता है। और **(पवमानः)** सबको पवित्र करने वाला परमात्मा **(ऊर्मिणा)** अपने प्रेम की वेग रूप शक्तियों से सबको पवित्र करता है। भावार्थ– परमात्मा कर्मों का फलदाता है।

भावार्थ– परमात्मा प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का फल देने वाला है।

द्रार्पि यसानो यजतो दिकि स्पृशमन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पिता।

स्कर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत्प्रत्नमस्य पितरमा विवासति। ऋ.9.86.14

अर्थ– (द्रार्पिम्) जो अपने कवच रूपी कर्मों के द्वारा **(वसानः)** शारीरिक यात्रा करता है। **(यजतः)** उस कर्मशील **(दिविस्पशं)** सत्कर्मों के द्वारा उच्च पुरुष को **(अन्तरिक्षप्रा)** अन्तरिक्ष की पूर्ति करने वाला परमात्मा **(भुवनेष्वर्पितः)** जो सर्वत्र व्याप्त है। **(स्वर्जज्ञानः)** स्वर्गादिक लोकों को उत्पन्न करने वाला **(नभसा)** सूक्ष्म सुत्रात्मा द्वारा **(अक्रमीत्)** चेष्टा करता है। **(अस्य पितरम्)** इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का जो पिता है **(प्रतनं)** और जो कि प्राचीन है। उसको उपासक पुरुष **(आ विवासति)** अपना लक्ष्य बनाकर ग्रहण करता है।

भावार्थ– जो परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है। जो स्वर्गादि लोकों को उत्पन्न करने वाला और अन्तरिक्ष की भी पूर्ति करने वाला है। जो इस ब्रह्माण्ड का एक मात्र स्वामी है और सदा से है उसको उपासक पुरुष अपना लक्ष्य बनाकर प्राप्त करता है।

सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धामं प्रथमं व्यानशे।

पदं सदस्य परमे व्योमन्यतो विश्वा अभि सं यानि संयतः।। ऋ. 9.86.15

अर्थ– (सः) उक्त परमात्मा **(अस्य)** जिज्ञासु के **(विशे)** शरणागत होने पर **(महि)** बड़ा **(शर्म)** सुख **(यच्छति)** उसको देता है। **(यः)** जो जिज्ञासु **(अस्य धाम)** इसको स्वरूप को **(प्रथमम्)** पहले **(व्यानशे)** प्रविष्ट होकर ग्रहण करता है। और **(यत्)** जो **(अस्य)** इस परमात्मा का **(पदम्)** स्वरूप है। **(परमे, व्योमनि)** जो सूक्ष्म से सूक्ष्म महदाकाश में फैला हुआ है उसको ग्रहण करता है। **(अतः)** इसलिए **(विश्वा)** सब प्रकार से **(संयतः)** संयमी जिज्ञासु होकर **(सत्यकर्माण्यभि)** सत्कर्मों को **(संयाति)** प्राप्त होता है।

भावार्थ– इस ऋचा में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन है।

प्रो अयासीदिन्दुरिदस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्।

मर्य इव युवतिभिः सुमर्षति सोमः कलशे शत–याम्ना पथा।।

ऋ.9.86.16

अर्थ– (इन्दुः) सर्व व्यापक परमात्मा **(इन्द्रस्य)** कर्म योगी के **(निष्कृत)** संस्कृत अन्तः करण को **(प्रो अयासीत्)** भली प्रकार प्राप्त होता है और **(सख्युः)** सखा के **(न)** समान **(सखा)** सखा होता है और **(संगिरम्)** सम्पूर्ण शक्तियों को **(प्रमिनाति)** प्रमाणित कर देता है। **(युवतिभिरिव)** युवती स्त्रियों के द्वारा जैसे **(मर्य्यः)** मर्यादा स्थिर की जाती है। **(कलशे)** इस ब्रह्माण्ड रूपी कलश में **(शतयाम्ना पथा)** सैंकड़ों शक्तियों वाले रास्ते से परमात्मा **(समर्षति)** भली भाँति गति कर रहा है।

भावार्थ– जैसे युवतियाँ अपने सदाचार से मर्यादा को बाँधती हैं। इसी प्रकार परमात्मा वेद मर्यादारूप वैदिक पथ से महापुरुषों को उत्पन्न करके मर्यादा स्थापित करता है।

प्र वो धियो मन्द्रयुवा विपन्युवः पतस्युवः संवसनेष्व क्रमुः।

सोमं मनीषा अभ्यनुषत स्तुभोऽभि धनेवः पयसेमशि श्रयुः।।

ऋ. 9.86.17

अर्थ– हे परमात्मन्! **(प्रवोधियः)** तुम्हारा ध्यान करने वाले **(मन्द्रयुवः)** तुम्हारा आनन्द चाहने वाले **(विपन्युवः)** उपासक लोग **(पनस्युवः)** स्तुति की कामना करते हुए **(संवसनेषु)** उपासना स्थानों में **(अक्रमुः)** प्रवेश करते हैं और (सोमम्) सर्वोत्पादक परमात्मा में **(मनीषा)** चित्त की सूक्ष्म वृत्ति द्वारा **(अभ्यनुषत)** सब प्रकार से निवास करते हैं **(स्तुभो)** जैसे उपास्य के **(अभि)** अभिमुख **(धेनवः)** इन्द्रियों की वृतियाँ **(पयसा)** वेग से **(अशिश्रयुः)** उसका आश्रय लेती है। इसी प्रकार उपासक की चित्तवृतियाँ ईश्वर की ओर झुक जाती है।

भावार्थ– हे परमात्मा! तुम्हारा ध्यान करने वाले, तुम्हारा आनन्द चाहने वाले उपासक लोग स्तुति की कामना करते हुए उपासना स्थान में प्रवेश करते हैं। जब वे समाहत चित्त से ईश्वर का ध्यान करते हैं तो उनकी चित्तवृतियाँ बड़ी तेजी से ईश्वर की ओर झुक जाती है।

आ नः सोम संयन्तं पिप्युषीमिषामन्दो पवस्व पवमानो अस्रि धम्।

या नो दाहते त्रिरहन्नप्तश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सु वीर्यम्।। ऋ. 9.86.18

अर्थ– (सोम) हे परमात्मन्! **(इन्दो)** हे प्रकाश स्वरूप! आप **(नः)** हमारे **(संयन्तम्)** सम्बन्धी और **(पिप्युषीम्)** वृद्धि युक्त **(इषं)** ऐश्वर्य को **(अस्रिधं)** जो अक्षय हो ऐसे धन से **(आपवस्व)** सब ओर से हमको पवित्र करें। **(या)** जो कि **(नः)** हमारे सम्बन्ध में **(त्रिरहन्)** तीनों कालों में **(असश्चुषी)** प्रतिबन्ध रहित **(क्षुमत्)** बहुत ऐश्वर्य वाले **(वाजवत्)** बल वाले **(मधुमत्)** मधुरता युक्त **(सुवीर्यम्)** बल करने वाले ऐश्वर्य को आप **(दोहते)** परिपूर्ण करें।

भावार्थ– इस ऋचा में परमात्मा से ऐसे ऐश्वर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई है जो अक्षय हो।

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रति रीतोषसोदिवः।

क्राणा सिन्धूनां कलशां अवीवशदिन्द्रस्य हार्याविशन्मनीषिभिः।।

ऋ.9.86.19

अर्थ– परमात्मा **(मनीषिभिः)** सदुपदेशको से उपदेश किये हुए **(इन्द्रश्च)** कर्मयोगी के **(हादि)** हृदय में **(आविशन)** प्रवेश करता हुआ **(कलशान्)** कर्मयोगियों के अन्तःकरणों की **(अवीवशत्)** कामना करता है। जो परमात्मा **(दिवः)** द्युलोक को **(सिन्धूनाम्)** स्यन्दनशील सूक्ष्म तत्त्वों का **(क्राणा)** कर्ता है और **(अह्नः)** दिन की **(उषसः)** ज्योतियों का **(प्रतरीता)** वर्द्धक है। **(सोमः)** वह सर्वोत्पादक परमात्मा **(विचक्षणः)** सर्वज्ञ परमेश्वर **(मतीनाम्)**

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

आइए विचार करें – क्या हो सकता है सृष्टि रचना का प्रयोजन?

● भावेश मेरजा

वैदिक तत्त्वज्ञान अनुसार सृष्टि की रचना ईश्वर करता है। ईश्वर प्रकृति नामक उपादान कारण (Material Cause) से सृष्टि की रचना करता है। ईश्वर जीवों के कल्याण के लिए सृष्टि की रचना करता है। वैदिक तत्त्वज्ञान में इन तीनों सत्ताओं अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि, अनुत्पन्न माना गया है।

वैदिक तत्त्वज्ञान अनुसार यह सृष्टि 'प्रवाह से अनादि' है। इसका अर्थ यह हुआ कि वर्त्तमान सृष्टि से पूर्व अनन्त बार सृष्टि बनी है और इस वर्त्तमान सृष्टि के पश्चात् भी अनन्त बार सृष्टि बनने वाली है। जैसे भूतकाल में सृष्टि अनन्त बार बनी है वैसे भविष्य में भी वह अनन्त बार बनेगी।

ईश्वर, जीव और प्रकृति – ये तीनों सत्ताएँ समय की दृष्टि से अनादि, अनन्त हैं। ईश्वर कब से है? जब से जीव और प्रकृति हैं। जीव कब से हैं? जब से ईश्वर और प्रकृति हैं। प्रकृति कब से है? जब से ईश्वर और जीव हैं। ठीक ऐसे ही, ईश्वर कब तक रहेगा? जब तक जीव और प्रकृति रहेगी। जीव कब तक रहेंगे? जब तक ईश्वर और प्रकृति रहेंगे। प्रकृति कब तक रहेगी? जब तक ईश्वर और जीव रहेंगे। अतः ईश्वर ने सर्व प्रथम बार सृष्टि (The very first creation) कब बनाई? – यह प्रश्न इन तीनों सत्ताओं के अनादि, अनन्त स्वरूप को, उनके सह–अस्तित्व को समझ लेने वाले जिज्ञासु को भूतकाल की अनन्तता (never-ending past) की ओर सोचने को विवश करेगा। उसे वही समाधान से सन्तुष्ट होना होगा कि जब से ईश्वर है तभी से वह सृष्टि–रचयिता है। ईश्वर का होना और ईश्वर का सृष्टि–रचयिता होना, एक–सी बात है! ठीक वैसे ही उसे अनन्त भविष्य (un-ending future) के पक्ष में भी सोचना होगा। इसलिए जब तक ईश्वर है तब तक वह सृष्टि–रचयिता रहेगा। जैसे भूत के गर्भ में अनन्त सृष्टि रही हैं, वैसे भविष्य के गर्भ में भी अनन्त सृष्टि (होने वाली) हैं! यह क्रम कभी रुकने वाला नहीं। This sequence of creation and dissolution of the universe has no start, no end – means there is nothing like the 'first creation' or the 'last creation'. The cycle of creation and dissolution has been for eternity and always goes on for eternity. यह एक समाधान तो है ही, परन्तु इस समाधान से सभी जिज्ञासुओं को पूर्ण सन्तुष्टि हो जाए ऐसा समझना भी उचित नहीं होगा। क्योंकि अनन्तता के विचार को ठीक से मानव मस्तिष्क में बौद्धिक दृष्टि से उपस्थित कर पाना प्रायः कठिन है। अतः इस बात को सभी पाठक इसी रूप में मान लेंवें, ऐसा आग्रह करने के स्थान पर जिज्ञासु लोग इस विषय पर अधिकाधिक विचार करें यही आवकार्य है।

ईश्वर सभी दृष्टि से पूर्ण सत्ता है। वह ज्ञान में पूर्ण है अर्थात् वह अपने स्वरूप के बारे में, जीवों के स्वरूप तथा उनके कर्मों के बारे में और प्रकृति तथा प्रकृति से उत्पन्न सर्व पदार्थों के स्वरूप तथा देश, काल आदि के बारे में सब कुछ जानता है। ईश्वर यथार्थ जानता है, उसका ज्ञान निर्भ्रान्त होता है। आनन्द की दृष्टि से भी ईश्वर पूर्ण है। उसका आनन्द स्वाभाविक है, अतः वह नित्य एवं एकरस है। ईश्वर और उसका आनन्द अभिन्न है, उनमें समवाय सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में ईश्वर आनन्द–स्वरूप है। व्यापकता या विद्यमानता की दृष्टि से भी ईश्वर पूर्ण सत्ता है। वह न केवल प्रकृति, सृष्टि और जीवों में व्यापक–विद्यमान है, जहाँ कोई भौतिक पदार्थ और जीव नहीं हैं वहाँ भी ईश्वर की सत्ता जैसी यहाँ है वैसी ही है। अतः स्थान की दृष्टि से भी ईश्वर पूर्ण है। ऐसे ही बल, क्रिया–सामर्थ्य, न्याय, दया आदि अन्य गुणों की दृष्टि से भी ईश्वर पूर्ण है।

प्रकृति और उससे निर्मित सभी पदार्थ स्वभावतः जड़, अचेतन, ज्ञान तथा संवेदना से शून्य हैं। उनमें न इच्छा होती है और न ही सुख–दुःख की संवेदना। हाँ, ईश्वर जब जड़ प्रकृति से सृष्टि और सृष्टिगत अन्य प्राकृतिक पदार्थों को बनाता है तो वह अपने अलौकिक ज्ञान–विज्ञान और रचना कौशल से उन्हें ऐसा स्वरूप प्रदान करता है कि उनके सदुपयोग से वे जीवों के सुख का कारण बन सकते हैं। इसलिए सृष्टिगत पदार्थों के ज्ञान पूर्वक उपयोग (भोग) से जीवों को सुख की प्राप्ति हो सकती है। अपने द्वारा निर्मित इस सृष्टि का सुख–प्राप्ति और दुःख–निवृत्ति के लिए कैसे सदुपयोग करना है, इसका अपेक्षित ज्ञान भी परम दयालु ईश्वर हमें वेदों के माध्यम से प्रत्येक सृष्टि के आरम्भ में प्रदान करता है।

जीव का स्थान ईश्वर तथा प्रकृति के बीच का है। न वह ईश्वर की तरह सर्वज्ञ है और न ही प्रकृति की तरह सर्वथा अज्ञ – ज्ञानशून्य। जीव है अल्पज्ञ। आनन्द उसका स्वाभाविक गुण नहीं है। अतः आनन्द पाने के लिए, आनन्दित होने के लिए उसे अपने से भिन्न सत्ताओं का सहारा लेना पड़ता है, अन्यथा वह अपने को आनन्दित नहीं कर सकता। इसलिए ईश्वर, प्रकृति (प्राकृतिक पदार्थ) तथा अन्य जीवों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर वह आनन्द प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है। आनन्द एक ऐसा विचित्र एवं श्रेष्ठ गुण है कि जीव उसकी उपेक्षा ही नहीं कर सकता। अतः सभी जीव ऐसी इच्छा तो सदैव करते हैं कि मैं आनन्दित रहूँ, परन्तु मुझे आनन्द नहीं चाहिए, मुझे दुःख, शोक चाहिए ऐसी इच्छा कोई जीव नहीं करता है। जीव की आनन्द–प्राप्ति की इच्छा सहज स्वाभाविक है। जीव जो कुछ भी चेष्टा करता है उसका अन्तिम प्रयोजन आनन्द–प्राप्ति और दुःखों से मुक्ति ही होता है। इसी के लिए वह प्रयत्न या कर्म करता है। जैसे ईश्वर अनन्त काल से और अनन्त काल के लिए सृष्टि–रचयिता है, वैसे जीव भी अनन्त काल से और अनन्त काल के लिए प्रयत्नकर्ता या कर्मों का कर्ता है। अतः जीव और उसके कर्म भी 'प्रवाह से अनादि' हैं। काल की दृष्टि से अनादि जीव अनादि काल से कर्मों का कर्ता है और अनन्त काल तक कर्मों का कर्ता रहेगा। दूसरे शब्दों में, जीव है तो कर्म भी हैं। बिना कर्मों का जीव हो नहीं सकता। ध्यातव्य है कि अल्पज्ञ जीवों के कर्मों का फल सर्वज्ञ, न्यायकारी परमात्मा देता है।

सर्वज्ञ ईश्वर जीवों के स्वरूप को पूर्णतः जानता है। वह जानता है कि ये जीव आनन्द की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहते हैं और उन्हें आनन्द प्राप्त करने के लिए मेरी (ईश्वर की) और सृष्टि की आवश्यकता रहेगी। दूसरी बात यह कि इन जीवों के द्वारा किए गए कर्मों के फल देने के लिए भी सृष्टि को रचना आवश्यक है। इन दो प्रयोजनों के लिए – 1. जीवों के कल्याण के लिए अर्थात् परोपकारार्थ और 2. जीवों के द्वारा किए गए कर्मों का फल देने के लिए – ईश्वर सृष्टि रचता है, ऐसा समझा जा सकता है। सृष्टि का ज्ञानपूर्वक भोग कर, अपवर्ग (मुक्ति) की प्राप्ति करने वाले जीव ईश्वर के उद्देश्य को सार्थक कर रहे हैं, ऐसा हम कह सकते हैं। जो लोग सृष्टि के पदार्थों का दुरुपयोग कर, उनका अन्धाधुन्ध भोग कर, सृष्टि का समुचित लाभ न उठाकर, मुक्ति की प्राप्ति हेतु कुछ भी यत्न नहीं करते हैं वे वास्तव में ईश्वर के सदाशय की उपेक्षा, अवहेलना करते हैं, ऐसा भी समझा जा सकता है। वास्तव में ऐसे ही लोगों की संज्ञा 'नास्तिक' होनी चाहिए।

सृष्टि–रचना का एक अन्य कारण भी विचारणीय है–ईश्वर में जो अद्भुत सामर्थ्य है वह तब ही सिद्ध हो सकता है जब वह सृष्टि को बनाए। ईश्वर के अद्भुत ज्ञान, बल, न्याय, दया इत्यादि गुणों का साफल्य होना, यह भी सृष्टि रचना का एक प्रयोजन है। सामर्थ्य होते हुए भी उसका सम्प्रयोग न करना कोई प्रशंसनीय बात नहीं। अतः ईश्वर अपने इस स्वाभाविक सामर्थ्य का प्रयोग सृष्टि की रचना, संचालन एवं प्रलय आदि के माध्यम से करता है और जीवों को आनन्दित करने का, उन्हें मुक्ति के साधन उपलब्ध कराने का सुयोग निरन्तर प्राप्त कराता रहता है।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि भरूच, गुजरात–392015, मो. 9879528247

☞ पृष्ठ 05 का शेष

सिक्ता निवावरी

उपासकों की कामनाओं को **(वृषा)** पूर्ति करने वाला परमात्मा हम लोगों को **(पवते)** पवित्र करे।

भावार्थ– सदुपदेशकों से उपदेश किए हुए कर्मयोगी के हृदय में प्रवेश करता हुआ कर्मयोगियों के अन्तः करण की कामना को परमात्मा पूर्ण करता है।

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परिकोशां अचिक्रदत्।

त्रितस्यनाम जनयन्मधु क्षरदिन्द्रस्य वायोः सख्याय कर्तवे।। ऋ. 9.86.20

अर्थ– **(मनीषिभिः)** विद्वानों से उपदेश किया हुआ **(पूर्व्यः)** अनादि सिद्धि परमात्मा **(पवते)** हमको पवित्र करता है। जो परमात्मा **(कविभिः)** विद्वानों द्वारा **(यतः)** ग्रहण किया हुआ है वह **(कोशान्)** प्रकृति के कोशों को **(अचिक्रदत्)** शब्दादि द्वारा प्रसिद्ध करता है। वह **(मधु)** आनन्द युक्त परमात्मा **(त्रितस्य)** सत्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था रूप प्रकृति पुञ्ज को **(नाम जनयन्)** नाम रूप से विभक्त करता हुआ **(इन्द्रस्य)** कर्मयोगी के **(वायोः)** तथा ज्ञान योगी के साथ **(सख्याय)** मैत्री **(कर्तवे)** करने के लिए **(क्षरत्)** अपने आनन्द को प्रवाहित करता है।

भावार्थ– कर्मयोगी और ज्ञान योगी परमात्मा के गुणों को धारण करने से परमात्मा के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। इतिशम्।

शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा, राजस्थान

भारतीय संविधान और धर्म निरपेक्षता

● भद्रसेन

हम भारतीयों के लिए यह एक गौरव की बात है कि हमारा संविधान अपने मूल सिद्धान्तों के कारण धर्म निरपेक्ष, समाजवादी और लोकतन्त्रात्मक कहलाता है। अपने प्रिय संविधान में मूल सिद्धान्तों का निर्देश करते हुए लिखा है कि 'भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाले बन्धुत्व बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प हों।'

इस सन्दर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संविधान के न्याय, स्वतन्त्रता, समता, बन्धुता, सुरक्षा मूल सिद्धान्त हैं। भारतीय संविधान के ये मौलिक सिद्धान्त पूर्णतः स्वर्णिम, उदार, निष्पक्ष, व्यावहारिक और वैज्ञानिक हैं। इन मूल सिद्धान्तों के होने पर ही लोकतन्त्र सच्चे अर्थों में साकार हो सकता है। इनके बिना प्रजातन्त्र हर तरह से अधूरा ही होता है।

भारतीय संविधान के अनुसार स्वतन्त्रता का अभिप्राय है– विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता। अर्थात् भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी इच्छा के अनुसार अपने ढंग से पूजा–पाठ, जप–तप, स्मरण–ध्यान, देव दर्शन, तीर्थ यात्रा आदि करने और अपने धर्म के लिए सत्संग, सभा–आयोजन तथा संगठन, धर्मस्थान बनाने की स्वतन्त्रता है। इसमें सरकार तब तक कोई बाधा नहीं डालेगी, जब तक वह कार्य राष्ट्र या दूसरों के लिए बाधक न हो। अतः इसका यह भाव है कि अपने संविधान में **धार्मिक स्वतन्त्रता** का अधिकार है।

भारतीय संविधान में इस प्रकार की धार्मिक स्वतन्त्रता के होते हुए भी इस संविधान से सम्बद्ध धर्म निरपेक्ष शब्द को देख एवं सुनकर अनेक कई बार नाक–भौं सिकौड़ते हैं। वस्तुतः यह विरोध केवल मूलभावना को न समझने के कारण ही है, क्योंकि धर्मनिरपेक्ष का तात्पर्य है कि भारतीय प्रशासन में किसी धर्म की अपेक्षा से कोई व्यवहार नहीं होगा। जैसे कि रेल, डाक, सेना आदि में किसी धर्म को सामने रखकर प्रवेश, क्रम नहीं होगा, अपितु सभी को योग्यता, क्रम के अनुरूप अवसर दिया जाएगा। पुनरपि भारतीय संविधान से सम्बद्ध धर्म निरपेक्षता की चर्चा को लेकर प्रायः परस्पर विरोधी चर्चा होती रहती है। धार्मिक जन कहते हैं कि धर्म एक अनिवार्य तत्त्व है, उसके बिना किसी का भी निर्वाह नहीं हो सकता। अतः कोई भी देश या संविधान धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकता, अर्थात् धर्म एक अनिवार्य तत्त्व है।

ऐसी स्थिति में धर्म के साथ अनिवार्य शब्द को देखकर धर्मनिरपेक्ष की दृष्टि से कुछ प्रश्न उभरते हैं, कि धर्म यदि अनिवार्य है तो वह सब के लिए एक ही होगी और तब उसके बिना किसी के भी जीवन का व्यवहार सम्भव नहीं होना चाहिए। यदि उसके बिना किसी का व्यवहार चलता है तो वह उसके लिए अनिवार्य नहीं कहा जा सकता। सब के लिए धर्म के अनिवार्य होने पर भारतीय संविधान के अनुसार मान्य धर्म निरपेक्षता एवं धर्म स्वतन्त्रता का भाव भी सिद्ध न हो सकेगा। जो वहाँ एक मौलिक अधिकार है। वहाँ सब को अपने–अपने धर्म को पालने की खुली छूट है। अतः एक धर्म दूसरे धर्म वाले के लिए अनिवार्य नहीं, यह व्यक्ति की इच्छा पर ही निर्भर है, कि वह जिस किसी धर्म को माने या न माने।

यदि गहराई के साथ ठण्डे दिल से इस सारी समस्या पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि इन दोनों में विरोध नहीं है। क्योंकि जब धर्म के साथ अनिवार्य शब्द का प्रयोग किया जाता है तो ऐसी स्थिति में धर्म के आचरणात्मक रूप को सामने रखा जाता है। इस दृष्टि से स्नेह, दया, भलाई, सच्चाई, ईमानदारी आदि व्यवहार की बातें आती हैं। जो सभी धर्मों में समान रूप से मान्य हैं। सभी धर्म समान रूप से धर्म के इस आचरण पक्ष के सम्बन्ध में एकमत हैं। अतः धर्म का आचरण वाला रूप सभी के लिए अनिवार्य कहा जा सकता है। क्योंकि इस के बिना किसी भी व्यक्ति, परिवार, समाज का व्यवहार न तो चल सकता है और न ही इसके बिना कोई सुखी हो सकता है। इसीलिए सभी दूसरों से अपने प्रति स्नेह, सच्चाई, भलाई, ईमानदारी आदि की अपेक्षा रखते हैं।

पर जब धर्म स्वतन्त्रता, निरपेक्षता की बात होती है तो वहाँ धर्म का अर्थ–कर्मकाण्ड (पूजा–पाठ आदि) होता है। अतः भारतीय संविधान के इस सन्दर्भ में निर्दिष्ट धर्म शब्द कर्मकाण्ड की दृष्टि से ही है। साहित्य में धर्म शब्द सदा से ही आचरण, कर्मकाण्ड, विश्वास, स्वभाव आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। सभी धर्मों में धर्म के अनेक पक्षों का वर्णन मिलता है।

भारतीय संविधान के अनुसार धर्म स्वतन्त्रता, निरपेक्षता का भाव कर्मकाण्ड से ही है। जिसमें सबको अपने–अपने ढंग से करने की स्वतन्त्रता है। जैसे कि कोई किसी विशेष स्थान (तीर्थ) पर स्नान करना चाहता है। किसी विशेष धर्मस्थल में अभीष्ट के दर्शन के लिए जाना चाहता है। किसी विशेष धर्मग्रन्थ को पढ़ना पसन्द करता है, किसी विशेष सत्संग, संगठन में सम्मिलित होने की इच्छा रखता है। ये ऐसी बातें हैं, जिनके सम्बन्ध में हर व्यक्ति, वर्ग में अपने–अपने विचार से स्वतन्त्रता (अपनी–अपनी इच्छा) मिलती है। अर्थात् भारतीय संविधान इस प्रकार के पूजा–पाठ, जप–तप, स्मरण–ध्यान, देवदर्शन, तीर्थयात्रा, चिह्नधारण आदि धर्म (कर्मकाण्ड) में सबकी स्वेच्छानुसार समान, स्वतन्त्र अधिकार देता है।

केवल भारतीय संविधान में ही नहीं, अपितु प्राचीन काल के धार्मिक साहित्य में भी ऐसी स्वतन्त्रता का स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता है। जैसे कि योगदर्शन में **ध्यान = एकाग्रता**, समाधि की चर्चा करते हुए, इसके अभ्यास के लिए नासिका के अग्रभाग, भृकुटि, ब्रह्मरन्ध्र, ओम शब्द आदि में से किसी एक को केन्द्र बिन्दु बनाने की खुली छूट है। ऐसे ही यज्ञ साहित्य में फल, अग्नि, देवता की दृष्टि से अपनी इच्छा के अनुरूप वैसा यज्ञ करने की स्वतन्त्रता दी गई है। प्रत्येक, प्रत्येक के लिए अनिवार्य नहीं।

इस सारे विवेचन का भाव यही है कि भारतीय संविधान की धर्म स्वतन्त्रता, निरपेक्षता कर्मकाण्ड से सम्बद्ध होने के कारण अनुचित नहीं है।

एक लम्बे संघर्ष, हज़ारों बलिदानों के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ। सही अर्थों में ही भारत की स्वतन्त्रता को स्व–तन्त्र बनाने के लिए एक संविधान सभा बनाई गई। जिसने प्रत्येक विषय में प्रत्येक पहलू से विचार के पश्चात् भारतीय संविधान को तैयार किया और भारतीय संसद ने उसको पारित किया। तब 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ।

इस सम्बन्ध में एक विशेष बात यह भी है, कि आज भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले रहते हैं। सभी को अपना–अपना धर्म प्यारा है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में और स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के निर्माण एवं विकास में सभी धर्म वालों ने योगदान दिया है और आज भी देश के सभी क्षेत्रों में सब अपना–अपना योगदान दे रहे हैं। यह ठीक है कि योगदान के अनुपात में अन्तर हो सकता है। अतः किसी भी धर्म को पूर्णतः देश विरोधी नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक अपराध जगत् की बात है, वहाँ गुप्त रहस्य, दस्तावेज बेचने, स्मगलिंग आदि करने में सभी धर्मों के लोग पकड़े जाते हैं। हाँ, संख्या के अनुपात में अन्तर हो सकता है। अतः किसी भी धर्म को उपेक्षित करना हानिकारक हो सकता है। सभी से सहयोग, सद्भाव विश्वास प्राप्त करने के लिए यही उपयुक्त ढंग है, कि सभी को अपने–अपने धर्म को मानने की स्वतन्त्रता दी जाए और सरकारी काम–काज किसी भी धर्म विशेष की अपेक्षा के आधार पर न हो।

182 शालीमार नगरए, होशियारपुर
मो. 9464064398

डॉ. भवानीलाल भारतीय एवं मेरे संस्मरण

● डॉ. विवेक आर्य

आर्य समाज के उद्भट विद्वान् डॉ. भवानीलाल भारतीय जी की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। आर्यसमाज के शीर्ष विद्वानों में भारतीय जी का नाम सदा गिना जायेगा। भारतीय जी के साथ सबसे प्रथम परिचय आज से 20 वर्ष पूर्व उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'आर्यसमाज के 20 बलिदानी' द्वारा हुआ था। इस पुस्तक के माध्यम से मुझे उनकी लेखनी के प्रथम बार दर्शन हुए। मैं अब उनके द्वारा लिखित पुस्तकों को पढ़ने के लिए तत्पर रहता हूँ। इसी श्रृंखला में मैंने उनके द्वारा लिखित/सम्पादित 'नवजागरण के पुरोधा', 'स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानंद तुलनात्मक' आदि ग्रन्थ पढ़े तो मेरी यह मान्यता स्थापित हुई कि डॉ. भारतीय जी वर्तमान में स्वामी दयानन्द के जीवन चरित, सिद्धांत आदि विषयों के सर्वोत्तम विद्वानों में से एक हैं। उस काल में उनके आर्यजगत में धारावाहिक रूप में आर्यसमाज के दिवंगत विद्वानों की लघु जीवनियों को प्रकाशित किया था। मेरे लिए यह अत्यंत लाभकारी था। कालांतर में भारतीय जी द्वारा रचित चारों वेदों के संक्षिप्त मन्त्रों की व्याख्या, स्वामी दयानन्द की खरी–खरी बातें, श्यामजी कृष्ण वर्मा जी की जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ आदि पढ़े। डॉ. भारतीय जी ने अपने द्वारा रचित साहित्य सृजन के इतिहास को लेख रूप में लिखा जिसे जींद, हरियाणा से प्रकाशित होने वाली शांतिधर्मी मासिक पत्रिका में स्वर्गीय श्री चन्द्रभानु जी द्वारा प्रकाशित एवं श्री सहदेव समर्पित जी द्वारा प्रकाशित किया गया। इस श्रृंखला में

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

वेदों में विश्व बन्धुत्व की भावना की विवेचना

● खुशहाल चन्द्र आर्य

इस लेख के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, उससे पहले यह बतलाना आवश्यक है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि रचने के बाद यानी पशु–पक्षी, कीट–पतंग, पहाड़, समुद्र, नदी–नाले, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश आदि सब रचने के पश्चात् मानव की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर पृथ्वी के अन्दर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक युवा स्त्री–पुरुषों की उत्पत्ति की। साथ ही चार ऋषि जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा था, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उनका प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये, जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री–पुरुषों ने उस वेद–ज्ञान को सुना। उन पुरुषों में ऋषि ब्रह्मा भी थे जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी, उसने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यह वेद–ज्ञान, पिता अपने पुत्रों को, गुरु अपने शिष्यों को सुनाते रहे और इस प्रकार यह वेद–ज्ञान लाखों, करोड़ों वर्षों तक चलता रहा, इसीलिए इस वेद–ज्ञान को श्रुति भी कहते हैं यानी सुनकर दूसरों को सुनाना। तत्पश्चात् लाखों, करोड़ों वर्षों बाद जब कागज़, स्याही, कलम आदि का अविष्कार हो गया तब इनको चार पुस्तकों में लिपिबद्ध कर दिया, जिनको वेद कहते हैं।

वेद का तात्पर्य ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि में एक विधान के रूप में मनुष्य–मात्र को दिया। जिस प्रकार सरकारी विधान से राष्ट्र चलता है, उसी प्रकार यह ज्ञान मनुष्यों के लिए विधान है। इनमें ईश्वर ने क्या काम मनुष्य को करना चाहिए, क्या काम नहीं करने चाहिए लिखा है। किन कार्यों के करने से मनुष्य अपने जीवन में उत्तरोतर उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करता है और अपने जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाते हुए अन्यों का जीवन भी सुखी व सम्पन्न बनाता है। जो व्यक्ति वेदानुसार अपने जीवन को चलाता है, वह मनुष्यों के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को भली प्रकार करते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को इस धरती पर भेजता है।

वेदों में ईश्वर ने मनुष्य के जीवन में काम आने वाले सभी विषय के सम्बन्ध में लिखा हुआ है। जिनमें विश्व बन्धुत्व की भावना पर विशेष ज़ोर दिया गया है, जिससे विश्व में सुख व शान्ति बनी रहे। वेदों में मौजूद अनेक विश्व बन्धुत्व के मन्त्रों में से कुछ मन्त्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं, जो इस भाँति हैं।

मन्त्र :– अज्येष्ठा सो अकनिष्ठा स एते सं भ्रातरो वा वृधुः सौभागाय। (ऋग्वेद)

अर्थ :– हम सब भाई–भाई हैं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सौभाग्य के लिए हम सब परस्पर मिल कर उन्नति करें।

मन्त्र : – माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्व वेद)

अर्थ :– भूमि हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं।

मन्त्र :– वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थ :– पूरा विश्व एक परिवार है।

मन्त्र :– सर्व भूतेषु चात्माने ततो न विचिकिन्सति

अर्थ :– हे मनुष्य! तू सब प्राणियों में अपनी आत्मा को देख और सब की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझ।

मन्त्र :– अनुव्रतः पितुः पुत्रः (अथर्ववेद)

अर्थ :– पुत्र, पिता के व्रत (आदर्श) का अनुसरण करने वाला होवे।

मन्त्र :– कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अर्थ :– पूरे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

मन्त्र :– जीवास्थ जीव्यासम। (अथर्ववेद)

अर्थ :– स्वयं जीवो और दूसरों को जीने दो।

मन्त्र :– सत्येनो त्रमिता भूमिः (यजुर्वेद)

अर्थ :– यह भूमि सत्य पर टिकी है।

मन्त्र :– आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्चति स पण्डित।

अर्थ :– जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझता है। वही पण्डित (विद्वान्) है।

मन्त्र :– तेन त्यक्तेन भुजिंथा, मामृधः, कि स्य स्विद्धनम्। (यजुर्वेद)

अर्थ :– इस संसार का त्याग भाव से भोग करो, इसमें लिप्त न हो, लालच न करो, यह संसार किसी का नहीं, ईश्वर का है।

(नोट :– इस मन्त्र का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है)

मन्त्र :– अहम नृतात सत्य मुपैसि (यजुर्वेद)

अर्थ :– मैं असत्य से सत्य की ओर चलूँ।

मन्त्र :– यत्र विश्व भवत्येक नीडम्। (यजुर्वेद)

अर्थ :– जिससे सारा विश्व एक आश्रय वाला होता है।

मन्त्र :– मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षान्ताम् (यजुर्वेद)

अर्थ :– सब प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें।

मन्त्र :– अकर्मा दस्यु रभि नो अमन्तुर न्य व्रतो अमानुषः। त्वं तस्या मित्र हन्व घर्दा सस्य दम्भयः।। (ऋग्वेद)

अर्थ :– जो कर्म नहीं करता वह दस्यु है। उसे कोई सुख न होवे, तुम शत्रुओं के समान उसका वध कर दो अथवा दास के समान उस पर अनुशासन करो।

वचन :– आत्मनः प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत् (वेदों के विद्वान् भीष्म पितामह का वचन भी वेदों के समान है)

अर्थ :– जो काम आपको अच्छा नहीं लगता, वह काम दूसरों के लिए भी न करो।

मन्त्र :– यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्मः।

अर्थ :– यज्ञ करना सब से श्रेष्ठ काम है।

मन्त्र :– स्वर्ग कामो यजेत (महर्षि याज्ञ वल्क्यं, यतपथ ब्राह्मण में लिखा है)

अर्थ :– जिसकी स्वर्ग जाने की कामना है, वह यज्ञ करे।

मन्त्र :– सत्यमेव जयते, नानृतम्।

अर्थ :– सत्य की सदैव जीत होती है, झूठ की नहीं।

कुछ वेद – मन्त्र व वेद मन्त्रों के समान ही मन्त्र, अर्थ सहित लिखे हैं, कृपया सुधि पाठकगण विचार व मनन करें।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
एम.जी. रोड, कोलकाता

सोमपान से हमारा जीवन आनन्दमय तथा शक्ति सम्पन्न

● डॉ. अशोक आर्य

मानव परमपिता परमात्मा का स्तवन करने से, उसका गायन करने से, उसके समीप बैठने से, उसका कीर्तन करने से ही अपने आप ही रक्षा करने के योग्य बन पाता है, अपनी रक्षा करने की शक्ति प्राप्त करता है। प्रभु स्तवन से वह अपने आप की, स्वयं की रक्षा के योग्य बनने के साथ ही साथ वह कभी वासनाओं का, कभी विषयों का शिकार नहीं होता, सदा इनका शिकार होने से बचा रहता है। इस प्रकार वासनाओं से बचकर वह सोम (शक्ति अथवा वीर्य) का अपने शरीर में रक्षण कर पाता है।

इस बात हो ही आगे बढ़ाते हुए कहा गया है कि हम सुख व प्रीति वर्धक अन्न का सेवन करें जो बल बढ़ाने वाला भी हो। ऐसा अन्न ही हमें सोमपान के योग्य बनाता है तथा इससे हमारा जीवन आनन्द से भर जाता है व शक्ति सम्पन्न हो जाता है। इस बात को मन्त्र इस प्रकार समझाने का यत्न कर रहा है–

अविशतोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम्।
यस्मिन विश्वानि पौंस्या ।।

ऋग्वेद 1.5.9।।

इस मन्त्र में दो बातों पर बल देते हुए बताया गया है कि विगत मन्त्रानुसार जब हम उस पिता का स्तवन करने से अपनी स्वयं की रक्षा के योग्य बन जाते हैं तो हम सब वासनाओं से दूर हो जाते हैं। इनके शिकार न होकर सोम का अपने शरीर में रक्षण करने में सक्षम होते हैं। अब इस तथ्य को ही आगे बढ़ाते हुए यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि–

सात्विक अन्न का सेवन : यह जो कभी न नष्ट हुए सोम वाला, यह जितेन्द्रिय पुरुष सदा ऐसे अन्न का सेवन करता है, जो अन्न उसे प्रसन्नता देने वाला होता है, खुशी देने वाला होता है, आनन्द देने वाला होता है, उसे खुश करने वाला होता है। ऐसे सात्विक अन्न का वह सेवन करता है, जो उसे सब प्रकार के बलों को दिलाने वाला हो। भाव यह है कि मानव जितेन्द्रिय होकर, जब वासनाओं को छोड़ देता है तो वह ऐसे पवित्र अन्न का सेवन करता है, जिस अन्न के सेवन से हमारे अन्दर सोम की वृद्धि होती है तथा हम सब प्रकार की शक्तियों के स्वामी बनते हैं।

सुखदायक अन्न को सेवनः ऐसा कहा जाता है कि जैसा खाओ अन्न, वैसा बने मन। भाव स्पष्ट है कि हम जिस प्रकार का अन्न खाते हैं तो हमारा शरीर भी उस प्रकार का ही बनता है। अन्न हम ऐसा प्रयोग करते हैं कि जो अन्न चोर ने चोरी से लाया होता है तो हमारे अन्दर भी बुरे विचार ही आने लगते हैं। यदि हम ऐसा अन्न खाते हैं, जिसमें पौष्टिक तत्त्व ही नहीं होते, इस अन्न से पेट तो अवश्य भर जाता है किन्तु शरीर में इससे किसी प्रकार की शक्ति नहीं आती। इसीलिए सदा पवित्र व शक्ति वर्धक अन्न का ही प्रयोग करना चाहिये। इस सम्बन्ध में मन्त्र अपने दूसरे भाग में इस प्रकार उपदेश कर रहा है–

सुख, प्रीति व बल बढ़ाने के लिए हमें भी ऐसे अन्न का ही उपभोग करना आवश्यक है, जो अन्न हमारे सुखों को बढ़ाने की शक्ति से सम्पन्न हो। हम ऐसे अन्न का अपने लिए प्रयोग करें जो हमारे अन्दर प्रीति अथवा भ्रातृभाव बढ़ाने वाला हो तथा हम ऐसे अन्न को उपयोग में लावें कि जो हमारे अन्दर बल, वीर्य आदि को बढ़ाने वाला हो। सुख, शन्ति, समृद्धि, प्रीति तथा शक्ति आदि बढ़ाने वाला अन्न ही सात्विक होता है तथा सात्विक अन्न का उपभोग ही हमारे जीवन को यह सब शक्तियाँ देने वाला होता है। इसलिए हमें सदा ऐसा अन्न ही अपने खाने में उपयोग में लाना चाहिये।

जब इस सात्विक अन्न को खाया जाता है तो इससे हमारे अन्दर सात्विक वृतियाँ बढ़ती हैं। सात्विक वृतियाँ जब बढ़ जाती हैं तो हम अपने अन्दर सोम की रक्षा बड़ी सरलता से कर पाने में सक्षम होते हैं। इसलिए हमें सदा सात्विक अन्न का ही सेवन करना चाहिये।

लोअर आई पाकेट, प्लाट 61, रामप्रस्थग्रीन
सेक्टर–7 वैशाली–201010 (गाजियाबाद)

अज्ञानता का निवारण–वैदिक धर्म से

● डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह

उत्तर प्रदेश में हिन्दुओं के मतान्तरण का षड्यंत्र चल रहा है। ईसाई प्रचारक लोगों को धन व चंगायी का लोभ देकर उन्हें क्रूस पहना रहे हैं। बपतिस्मा दे रहे हैं। अभी ऐसा ही जिला जौनपुर में हुआ, वहाँ दुर्गा यादव ने जादू–टोने दिखाकर हिन्दू वर्ग को इसाई मत में मतान्तरण किया और अब फरार है। उधर दिल्ली में आशु बाबा पकड़ा गया जो था तो मुसलमान जिसका नाम था आसिफ खान। उसके छद्म वेश हिंदुओं के साधु का रूप रखे देख सहस्रों नर–नारी शिष्या व शिष्य बन गए। वह भी उन्हें उपदेश देने लगा, उधर कामुकता का खेल खेलने लगा तथा हिन्दू धर्म में विष घोलने का काम करने लगा। ऐसे लोग षड्यंत्र कर हिन्दू धर्म को बदनाम करने में लगे हैं।

अभी दिल्ली की ही घटना थी तांत्रिकों के चक्कर में एक परिवार के ग्यारह लोगों ने आत्महत्या की।

राम रहीम, आशा राम, रामपाल, जैसे अभी अपने भक्तों के साथ प्रकाश में आए, उनके लाखों भक्त बन गए थे। आज कारागार में हैं।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसे दुष्कर्मों की पोल खुलती है तभी पता चलता है कि ये लोग छद्म चर, कामुक, पिचाश व बलात्कारी हैं। परन्तु कभी उनके अनुयायी व भक्तों की भी है, वह भी दोषी हैं क्योंकि वह वैदिक धर्म को न मान अवैदिक मत व पाखण्डी छद्म चरों के बहुत जल्दी शिष्य बन जाते हैं। अपनी विवेक बुद्धि से सत्यासत्य का निर्णय नहीं लेते। इसके लिए आज सभी को वेदों की ओर लौटना होगा तभी लोग समझ पाएँगे कि सत्या–सत्य क्या है? पाखण्डों का कारण अज्ञानता, अशिक्षा है, अविद्या है।

यहाँ कहने का तात्पर्य है कि तान्त्रिक कर्म, फलित ज्योतिष, झाड़–फूँक, जादू–टोना, धार्मिक कार्य नहीं अपितु पाखण्ड हैं। जनता के साथ धोखा है। इन दुष्कर्मों से दूर रहना चाहिए, आज समाज में अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरुडम की दुकानें खूब चल रही है। सरकार व समाज, सुरक्षा बल अच्छी प्रकार जानते हैं। परन्तु इन पाखण्डों पर कोई अंकुश नहीं लगाया जाता, जब कोई घटना हो जाती है तो इनकी धरपकड़ होती है परन्तु इससे क्या लाभ! तब तक किसी या किन्हीं मासूम की जान जा चुकी होती है या बलि चढ़ायी जा चुकी होती है। अभी भी छानबीन की जाए तो भारत में अनेक स्थानों पर जानवारों की बलि चढ़ाई जाती है। गण्डे–ताबीज बाँधे जाते, बपतिस्मा के नाम पर चंगायी करने का अन्धा खेल खेला जा रहा है। ऐसे लोग मिल जाएँगे।

हिन्दुओं में अनेक पाखण्ड हैं यदि किसी का बालक मूल नक्षत्रों में जन्म ले ले तो उन्हें अन्धविश्वासों में धकेल कर लूटा जाता है। मंगल को जन्मे बालक बालिकाओं का विवाह मंगली से ही होना चहिए। यह सब अशिक्षा व अन्धविश्वास है। अनेक लोग शनिवार को बुरा दिन मानते हैं। अनेक बृहस्पतिवार को केशच्छेदन और कर्म नहीं कराते। यह और कुछ नहीं अशिक्षा अज्ञानता है जो आज की शिक्षा में नहीं और यही कारण है कि स्नातक, परास्नातक व उच्च पदस्थ व्यक्ति भी इन अन्धविश्वासों के गर्त में आँख बन्द करके चले जाते हैं। इसके प्रति यदि समाज में जागृति फैलायी है तो केवल आर्य समाज ने फैलायी है अथवा ऐसे संगठन इस ओर ध्यान देने लगे हैं जो आर्य धर्म से प्रेरित हैं। टी.वी. चैनल भी इस कार्य में सहयोग कर रहे हैं। परन्तु उधर फलित ज्योतिषियों, पाखण्ड व आडम्बर वाले धारावाहिकों को भी दिखाया जा रहा है।

जन्म पत्र बनाए जाते हैं जो पाखण्डियों की धूर्तता है। जन्मपत्री बनाने वालों को अपने व अपनी सन्तान के जन्म के बारे में कुछ पता नहीं, औरों का तो क्या बताएगा? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है–

जन्मपत्री नहीं किन्तु उसका नाम 'शोक पत्र' रखना चाहिए क्योंकि जब संतान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है। परन्तु वह आनन्द तब तक होता है कि जब तक जन्मपत्र बनके ग्रहों का फल न सुने। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता–पिता पुरोहित से कहते हैं– **"महाराज आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइये..."** पुरोहित इसी जन्म पत्र को सुनाते–सुनाते भय भी दिखाता है **"ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं..."** भय दिखाकर यजमान के भयभीत होने पर भोजन, रुपया, पैसा अच्छी दक्षिणा लेकर उपाय भी बताता है।

कहने का औचित्य है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था ही सुदृढ़ नहीं है। गुरुकुल शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो। पाठ्यक्रमों में वेद के विषय हों और आचार अनाचार की शिक्षा हो। आज की शिक्षा केवल व्यावसायिक है, जहाँ आध्यात्मिकता, नैतिकता, चरित्र निर्माण का अभाव है। देश स्वतंत्र हो गया परन्तु हमारा ध्यान शिक्षा पर नहीं गया। आज की शिक्षा जहाँ भौतिकवाद के दर्शन कराती है। ब्यूटीपार्लर, रेस्तरां, पब, डान्सबार, मद्यशालाओं की ओर ले जाती है। वहाँ समाज व राजनेताओं, विद्वानों, शिक्षा से सम्बंधित अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए कि शिक्षा आज इस स्थिति में क्यों पहुँची? वास्तविकता यह है कि आज हम मैकाले की शिक्षा से दूर नहीं हो पाए हैं। इसी कारण समाज में जादू–टोना, तांत्रिक कर्म, बलिप्रथा, फलित ज्योतिष जैसे अन्धविश्वास व जघन्य अपराध तक बढ़ते ही जा रहे हैं।

जब तक शिक्षा को भारतीय वैदिक शिक्षा जो सनातन है से नहीं जोड़ा जाएगा अन्धविश्वास व अपराध चलते रहेंगे, बढ़ते रहेंगे कितनी भी दण्ड व्यवस्था बना लें, बढ़ा लें कितने ही कानून में परिवर्तन कर लें, अपराध बन्द नहीं होंगे। अज्ञानता व अशिक्षा के कारण ही लोग धर्म भ्रष्ट हो जाते हैं।

सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा इस देश की उन्नति का मूल है। आइए अपने भारत की उन्नति के लिए शिक्षा को वेद से जोड़ें, वेदों की ओर लौटें।

स्वतन्त्रता के पश्चात् अब तो हमें शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। जिस दिन शिक्षा व्यवस्था वैदिक संस्कृति से परिपूर्ण जो जाएगी भविष्य में उसका परिणाम अत्यन्त सुखदायक हो जाएगा। हमें मैकाले की शिक्षा को हटा भारतीय संस्कृति व वैदिक शिक्षा की ओर चलना होगा। तभी अपराध व अन्ध विश्वास, पाखण्ड समाप्त हो सकेंगे। हिन्दुओं का मतान्तरण कोई नहीं कर पाएगा।

चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा
मो. 8650119935

☞ *पृष्ठ 07 का शेष*

डॉ. भवानीलाल ...

एक लेख में भारतीय जी ने अपनी इच्छा प्रकट लिखी कि वह 1983 में प्रकाशित उनकी पुस्तक ऋषि दयानन्द की "जीवनी नवजागरण के पुरोधा" को पुनः प्रकाशित करने के इच्छुक हैं। जींद में मेरे पड़ोस में रहने वाले श्री अशोक गौतम जी ने भारतीय जी की इच्छा को जानकर शांतिधर्मी के प्रकाशक श्री सहदेव जी से सहयोग के लिए संपर्क किया। यह जानकर उसे प्रकाशित करने के लिए मैंने घूड़मल ट्रस्ट हिंडौन सिटी के श्री प्रभाकर आर्य जी से प्रकाशन हेतु संपर्क किया। उनकी स्वीकृति मिलने पर एक लाख रुपया श्री अशोक गौतम जी एवं उनके परिवार द्वारा दान स्वरूप दिया गया। जिससे इस महान ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन हुआ। इस यज्ञ में मेरी छोटी सी आहुति थी। जिसका पुण्य लाभ मुझे यह मिला कि भारतीय जी से मेरा फोन द्वारा वार्तालाप आरम्भ हुआ। उन्होंने प्राचीन साहित्य से लेकर आर्यसमाज के विद्वानों के अनेक संस्मरण मुझे सुनाये। उनके मार्गदर्शन से मैंने आर्यसमाज के अनेक पुस्तकालयों का भी अवलोकन किया। 2009 में भूतपूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि दिल्ली में कुछ ईसाई पुस्तकालयों में आर्यसमाज से सम्बन्धित सामग्री हैं। जिसका मुझे अवलोकन करना चाहिए। मैंने कश्मीरी गेट के निकट स्थित कैंब्रिज लाइब्रेरी एवं ज्योति लाइब्रेरी का अवलोकन किया। डॉ. भारतीय जी ने मुझे इस विषय में मार्गदर्शन 1965 में पंडित महेश प्रसाद मौलवी आलिम फाज़िल के लेख की प्रतिलिपि भेजकर किया। इस लेख में स्वामी दयानन्द के संपर्क में आये प्रमुख ईसाई प्रचारकों के नाम और काल आदि का वर्णन था। उस सूची के आधार पर एवं इंटरनेट की सहायता से मैंने ईसाई पादरियों द्वारा अथवा उनके विषय में लिखित पुस्तकों को खोजना आरम्भ किया। मुझे न केवल उनके द्वारा लिखी गई अनेक पुस्तकों के दर्शन हुए अपितु अनेक पादरी खड़क सिंह आदि के चित्र भी देखने को मिले। इस सारी सामग्री को एकत्रित कर मैंने भारतीय जी के पास भेज दिया। भारतीय जी ने अल्पसमय में इस सामग्री के आधार पर एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक का शीर्षक 'स्वामी दयानन्द और ईसाई मत' था। इस पुस्तक का प्रकाशन भी घूड़मल ट्रस्ट द्वारा किया गया। इसके प्रकाशन में डॉ. दीन बंधु चन्दोरा जी ने मेरे अनुरोध पर अमरीका से दान अपने पुत्र की स्मृति में दिया . डॉ. भारतीय जी ने इस पुस्तक की भूमिका की पहली पंक्ति में यह लिखा कि इस पुस्तक की प्रेरणा मुझे डॉ. विवेक आर्य जी से मिली। मेरा नाम लिखकर भारतीय जी ने मुझे सम्मानित किया। यह उनका बड़प्पन था जिसके लिए मैं उनका आभारी रहूँगा।

कालांतर में भारतीय जी से अनेक तथ्य मुझे जानने को मिले। मेरे लेखों को पढ़कर वह फोन पर प्रतिक्रिया अवश्य देते एवं सराहना देते। आर्यसमाज की संगठनात्मक स्थिति से वह अत्यंत दुखी रहते थे। पत्र–पत्रिकाओं में आलोचना आदि छपने पर वह मौन रहते। मगर एक बार उनकी पत्नी ने मुझे इस सन्दर्भ में एक बात कही। जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। माता जी ने मुझे बताया कि आरम्भ में जब भारतीय जी ने लिखना प्रारम्भ किया तो उनके साथी शिक्षक उनसे कहते आप राजस्थान बोर्ड के पाठ्यक्रम की पुस्तकें क्यों नहीं लिखते। उससे आपको आर्थिक आय होगी। आर्यसमाज के लेखन से आपको कुछ नहीं मिलता। उल्टा आपको अपनी ओर से धन व्यय करना पड़ता है। इस पर भारतीय जी ने कहा था कि मेरी लेखनी केवल और केवल स्वामी दयानन्द के लिए चलेगी। यह बिकाऊ नहीं है। भारतीय जी का ऐसा महान चिंतन, उनके आदर्श हमें जीवन में सदा प्रेरित करते रहेंगे। उनके सकारात्मक चिंतन का मेरे ऊपर विशेष प्रभाव आजीवन बना रहे। यही ईश्वर से प्रार्थना है। यही मेरी उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

Email- alkamathur15@gmail.com

पत्र/कविता

समलैंगिकता बनाम सामाजिक नैतिकता

समलैंगिकता के विषय में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पढकर भारत की पूरी जनता स्तब्ध रह गई और अधिकतर की जुबान पर हैरानी भरी यही चर्चा है कि भारतीय समाज में सहमति से अनैतिक कर्म करने को अपराध की श्रेणी से बाहर कैसे निकाल दिया गया। हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जब से सृष्टि की रचना होकर मानवी जीवन की व्यवस्था बनी तब से लेकर वर्तमान काल तक इस भारत भूमि पर चोरी और जारी को सभी अन्य बुराइयों से अपेक्षाकृत सबसे बुरा माना जाता रहा है। हमारा इतिहास प्राचीन एवं अर्वाचीन धार्मिक तथा सामाजिक ग्रन्थ बताते चले आ रहे हैं कि व्यभिचार से बढ़कर गन्दा काम अन्य कोई नहीं हो सकता।

समलैंगिकता की बात तो दूर, दूसरे की पत्नी, माता, बहन व बेटी की ओर आंख उठाकर कुदृष्टि से देखना भी बड़ा पाप समझा जाता है। इसी तरह दूसरे के पति आदि की ओर कुविचार मन में आना स्त्री के लिए भी महापाप कहा गया है। आदिकाल से ही उक्त आचरण का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था रही है। बल्कि संतानोपत्ति न करना हो और व्यर्थ में पति–पत्नी सहमति से भी समागम करते हों तो भी शास्त्रानुसार यह व्यभिचार की श्रेणी में आता है।

विदेशी शासकों ने भी हमारी सभ्यता, संस्कृत और सामाजिक नैतिक मूल्यों का पूरा ख्याल रखा। अंग्रेजों ने भी इसलिए भारतीय दण्ड संहिता (आई. पी. सी.) की धारा 376 तथा 377 जैसी अनेक धाराओं का निर्माण किया, क्योंकि वे भली भांति जान गए थे कि परस्त्रीगामी होना, परपुरुष गामी होना तथा समलैंगिकता आदि सभी प्रकार के व्यभिचार इस देश की संस्कृति एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होने के कारण अपराध हैं।

पूरे संसार के बड़े–बड़े विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि 'वेद' संसार की लाइब्रेरी का पहला पुस्तक है और धर्म से पहले पूरी पृथ्वी पर कोई अन्य मत–मतांतर नहीं था। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण, इसके नियमों का पालन करना हमारा मौलिकधर्म है। सभी मतपन्थों का भी कोई भी धार्मिक ग्रन्थ समलैंगिकता को उचित नही ठहराता, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से अप्राकृतिक होने के कारण अनैतिक है।

उपरोक्त निर्णय के आने के पश्चात से शिथिल मानसिकता वाले व्यक्तियों पर इसका कुप्रभाव पड़ने लग गया है। इस निर्णय के भयंकर दुष्परिणाम तो भविष्य में आएंगे, जैसे संक्रामक रोगों की उत्पत्ति अर्थात् छूत की बीमारियों का सहजता से आदान–प्रदान से असाध्य रोग उत्पन्न होंगे तथा नए नए प्रकार के विवाद सुनने को मिलेंगे। अध्यात्मिक रूप से भी भारतीय जनमानस के लिए समलैंकिता निश्चित रूप से अनैतिक कर्म है। लोग मानसिक रूप से पीड़ित रहने लगेंगे। चर्चाधीन निर्णय वास्तव में भारतीय समाज के लिए अप्रत्याशित है, क्योंकि वर्ष 2013 में इस विषय से संबंधित प्रत्याशित निर्णय आ चुका था। उक्त स्थिति के दृष्टिगत उक्त निर्णय वेदानुकुल न होने के कारण, आर्यसमाज सहमति से समलैंगित सम्बन्ध बनाने का पुरजोर विरोध करता है। अतः माननीय सर्वोच्च न्यायालय को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करके यथाशीध्र पहले वाली स्थिति बनानी चाहिए, ताकि भारत की जनता की बेचैनी दूर हो सके और सामाजिक नैतिक मूल्यों का ह्रास रुक सके।

इन्द्र सिंह (संरक्षक)
आर्य समाज (घण्टाघर, भिवानी)

****

मंत्र गीत

महात्मा हंसराज के जीवन में प्रतिफलित् वेद माता के स्वर

यशा यासि प्रदिशो दिशश्च यशः पशुनामुत चर्षणीनाम्।
यशा पृथिव्या आदित्य उपस्थेऽभूयासं सवितेव चारुः।।

अथर्व 13. 1.38

ओ३म् यशमान ओ३म् अरमान।
करें यशवान ओ३म् भगवान।।
व्योम भूमि पाताल प्रान्तर,
वन पर्वत सर दिशा–दिशान्तर।
सर्वत्र संचरित प्रभु का यश,
विचरित करता सृष्टि सुखान्तर।।
जगें अरमान उगें उद्यान।
करें यशवान ओ३म् भगवान।।
प्रस्तर रतन स्वर्ण मुक्ताकण।
सुमन सुरभि फल बल रंजन।
कण्ठ कोकिला हिरण मयूरी,
अश्ववेग गो दुग्ध सुधाधन।
सृष्टि उद्यान फलें मुस्कान।
करें यशवान ओ३म् भगवान।।
धरती माता गोद तुम्हारी।
श्रुतिमाता की वाणी प्यारी।
सूर्यज्योति से चारु कीर्ति ले,
अंग उमंग भरे उजियारी।
ईश मुस्कान बने वरदान।
करें यशवान ओ३म् भगवान्।।

देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.)

पल पल इनका गुणगान करो

करो समादर माताओं का, बहनों का सम्मान करो।
स्त्री ब्रह्मावभूविथः का स्वर फिर गुंजायमान करो।।
माता निर्माता भवति यह शतपथ ब्राह्मण है कहता,
हर पीड़ा को सह लेने की है इनमें अद्भुत क्षमता।
शुद्धाः पूताः यज्ञियाः देवी इन पर तुम अभिमान करो।

जहाँ नारियाँ पूजित होती वहाँ देवता करें निवास,
कथन है यह महाराज मनु का, दयानन्द का यह विश्वास।
इनके चरणों की सेवा कर तुम अपना कल्याण करो।।

माता मदालसा कौशल्या कैकेची और सुभद्रा,
गार्गी सीता सावित्री दमयन्ती जीजा बाई लोपामुद्रा।
गृहाश्रम को स्वर्ग बनाती झिलमिल इनसे उत्थान करो।।
श्रद्धापूर्वक तृप्त करो बस सच्चा तर्पण श्राद्ध यही है,

स्वर्ग है इनकी चरणों में यह ही धातृ और नहीं है।
माँ का दर्जा सबसे ऊँचा, पल पल इनका गुणगान करो।।
जो झुकता चरणों में इनके सुख शान्ति दीर्घायु पाता,

जहाँ अनादर होता इनका वह परिवार सदा दुःख पाता।
शोभा सिर की पगड़ी जैसी ऋषिवर सा उपमान करो।।

संजय सत्यार्थी
आर्य सदन
नेमदार गंज (नवादा), बिहार

सावधान आर्य समाज

आर्य समाज विचारों की स्वतन्त्रता का मंच रहा है, इसमें प्रत्येक सभासद को अपनी बात रखने का सम्पूर्ण अधिकार दिया गया है। परन्तु कभी कभी कुछ इस प्रकार के विचार प्रस्तुत कर दिए जाते हैं जो आर्य समाज के सिद्धांतों और मान्यताओं के बिल्कुल विपरित होते हैं। उदाहरण के लिए सत्संग में गायत्री मन्त्र को फोटो लगा दिया जाए, इससे उपस्थिति बढ़ जाएगी जोकि आर्य समाज के निराकार उपासना के बिल्कुल विपरित है। इसी प्रकार आर्य समाज की व्यवस्थाओं का बदलने में भी विचार प्रस्तुत होते रहते हैं। जैसे कि साप्ताहिक सत्संग को दैनिक कर दिया जाए।

इस प्रकार के विचार देने वाले लोग समय के साथ–साथ आर्य समाज से किनारा भी कर लेते हैं और अपना अलग ही कारोबार करने लगते हैं। आर्य समाज के विरोधी ऐसे लोगों की सहायता करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। इनकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हाँ! सावधान रहना आवश्यक है।

आर्य समाज विश्व व्यापी हो रहा है। विश्व सम्मेलन समय–सयम पर होते रहते हैं। भारत में भी और विदेशों में भी आर्य समाज की स्थिति संगठनात्मक दृष्टि से सुदृढ़ हो रही है । ''सावधान रहने की आवश्यकता है।

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

आर्य समाज पुन्हाना (मेवात) हरियाणा का वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

33 यज्ञ वेदियों में 125 यजमान दंपतियों द्वारा पूर्णाहुति से हुआ समापन

आर्यसमाज पुन्हाना को वेद प्रचार उत्सव इस बार पंजाबी बारात घर में करना पड़ा। बरात घर के विशाल हाल में प्रतिदिन प्रातः व सायं हस्तिनापुर मेरठ के नवोदित भजनोपदेशक पंडित अजय आर्य व उनकी भजन मंडली के लगभग 1 से डेढ़ घंटा भजन होते रहे। होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी का किसी आध्यत्मिक विषय पर लगभग एक सवा घण्टे उपदेश होता था।

एक दिन पुन्हाना के राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य पुरुषार्थी जी का उपदेश हुआ, जिसमें स्वामी विवेकानंद सीनीयर सेकेंडरी विद्या पीठ में प्रेरणास्पद व्याख्यान हुआ। अंतिम दिन अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति थी। पूरे मेवात के अनेकों आर्य समाजो से जनता जनार्दन आई थी। फल स्वरूप पूरा परिसर खचा खच भरा हुआ था। 33 यज्ञ कुण्डों में चारों तरफ से 125 सपत्नीक यजमान दम्पती विराजमान थे।

अंतिम दिन ऋषि लंगर में 700 जनों के भोजन की व्यवस्था आर्यों ने की थी। प्रत्येक सायंकालीन सत्र में अतिथि के रूप में कस्बे के किसी गणमान्य व्यक्ति का आगमन होता था जो अंत में अपनी सद्भावना भी व्यक्त करते थे।

प्रधान श्री राम आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय में लगाया गया डेंटल चेकअप कैंप

दो हजार विद्यार्थियों का किया गया चेकअप

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय में एनएसएस यूनिट द्वारा डेंटल चेकअप कैंप लगाया गया। इसमें 2000 विद्यार्थियों व स्टॉफ सदस्यो के दांतों का चेकअप किया गया। डॉ. अमीत शर्मा, डॉ. हेमंत सेठ ने दांतो का चेकअप करते हुए विद्यार्थियों को उनके दांतो की समस्या से अवगत कराया। डॉ. अमित ने कहा कि अधिकतर लोग खाने के बाद ब्रश नहीं करते है जिसके कारण दांतो की समस्या देखने को मिलती है। पिछले कुछ समय में फास्ट फूड खाने का चलन भी युवाओं में बढ़ गया है जिससे दांतो की सडन की प्राब्लम काफी देखने को मिल रहा है। युवाओं को दांतो की समुचित देखभाल करने के लिए रोजाना ब्रश करना चाहिए। साथ ही नियमित रूप से साल में एक बार जरूर दांतों की चेकअप करवानी चाहिए। तभी वो अपने दांत को सुरक्षित रख सकते है। उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन और रजिस्ट्रार डॉ. सुषमा आर्या ने डेंटल चेकअप टीम का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्थान के एनएसएस यूनिट द्वारा लगाए गए इस कैंप से सैकड़ों विद्यार्थियों को दांतो से जुड़ी समस्या के बारे में पता चला। वहीं प्राथमिक आधार पर विद्यार्थियों के दांतों की समस्या का निदान किया गया। आगे भी संस्थान द्वारा ऐसे हेल्थ से जुड़े कैंप का आयोजन किया जायेगा। मानिकपाल सिंह और परलवद्र ने कैंप को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। संस्थान द्वारा चेकअप टीम को शिल्ड देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डीन डॉ. देशबंधु गुप्ता, डीन वेल्फेयर जसबीर ऋषि, डॉ. स्मृति,

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का अधिवेशन संपन्न

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना के तत्त्वावधान में नगर के पं. नरेंद्र भवन में आयोजित किया गया।

अधिवेशन का उद्घाटन आर्य समाज के सन्यासी एवं गुरुकुलों के जनक स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने दीप प्रज्ज्वलित कर दिया।

उद्घाटन से पूर्व आचार्य सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए स्वामी प्रणवानंदजी सरस्वती ने कहा कि आधुनिक विकास की नीति ने भारतीय समाज और दुनिया में कई समस्याओं को जन्म दिया है। उच्चतम न्यायालय में बैठे न्यायमूर्ति संविधान और कानूनों के तहत भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों को ऊँचा उठाने वाली सांस्कृतिक परंपराओं को तोड़ने पर मजबूर हैं। ऐसी परिस्थिति में समस्याओं के समाधान के लिए एक मात्र उपाय गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति है। गुरुकुलीय शिक्षा केवल पढ़ना–पढ़ाना नहीं है, बल्कि यह जीवनशैली है। सभी का स्वागत आर्य प्रतिनिधि सभा, आं. प्र., तेलंगाना के महामंत्री विट्ठल राव आर्य ने किया।

अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज की विसंगतियों के बीच श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का यह राष्ट्रीय अधिवेशन ऐतिहासिक उपक्रम का जनक रहेगा। आर्य समाज ने देश को आज़ादी दिलाने और सामाजिक परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बढ़ती हुई भौतिकवादी व भोगवादी नीतियों के चलते समाज में नैतिक मूल्यों की गिरावट को रोकने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली विकल्प दे सकती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह काम केवल आर्य समाज ही कर सकता है। गुरुकुल, आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी है।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 17/18-10-2018

डी.ए.वी. सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़ में रक्तदान शिविर का आयोजन

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर–15ए, चण्डीगढ़ में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। स्कूल परिसर में यह शिविर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चण्डीगढ़, रोटरी क्लब, सिटी ब्यूटीफुल, के संयुक्त सहयोग के निमित किया गया।

प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा और उनकी टीम ने इस विशाल समारोह को सफल बनाने के लिए बड़े उत्साह से काम किया। प्राचार्या ने अपने कर्मचारियों तथा छात्रों को इस मानवतावादी कार्य के लिए अपने पूरे दिल से प्रयास करने के लिए उत्साहित किया। विद्यालय के पूर्व पठित छात्रों, एन.एस.एस. के सदस्यों, रोटरी क्लब के सदस्यों, सैक्टर–15 के

निवासियों, स्टॉफ कर्मचारियों, छात्रों तथा उनके अभिभावकों ने इस महान कार्य को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। सरकारी मेडिकल कॉलेज तथा अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने रक्त दाताओं की सुरक्षा हेतु स्वेच्छा से भाग लिया। 305 के लगभग एकत्रित रक्तदाताओं के सहयोग से 209 यूनिट रक्त संग्रह किया गया जो मानवता के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा योगदान था।

विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों श्री आर. सी. जीवन (अध्यक्ष), श्री रवीन्द्र तलवाड़ सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली, सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर डी.एस. ढिल्लों, श्री वीरेन्द्र के. गर्ग आदि ने इस शुभावसर पर उपस्थित होकर रक्तदाताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। रक्तदाताओं के लिए दूध, फल तथा स्वास्थ्य वर्धक भोजन की भी व्यवस्था की गई थी। उन्हें प्रशस्तिपत्र तथा उपहार आदि देकर सम्मानित भी किया गया।

स्कूल के दयालु क्लब ने जरूरतमंदों के लिए खाद्य दान एकत्र करक और मानवता की सेवा करके महान कार्य में योगदान दिया।

डी.ए.वी. श्रेष्ठ विहार के विद्यार्थी 'सी.एस.आई.आर. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार' से सम्मानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली–92 के नवीं कक्षा के दो विद्यार्थियों – रोहन गुप्ता एवं कुशाग्र कस्तूरिया को उनकी नवोन्मेष विधि के लिए डॉ. हर्षवर्धन (विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री) के द्वारा विज्ञान भवन, दिल्ली में आयोजित एक भव्य पुरस्कार समारोह में 'सी.एस. आई.आर. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

यह नवोन्मेष भारतीय स्वच्छता मिशन को समर्पित है। इन विद्यार्थियों ने स्वतः साफ और फ्लश होने वाले ड्रीम शौचालय बनाने के लिए नवोन्मेष डिज़ाइन तथा

विधि [illegible] के सिद्धांत पर मॉडल तैया[illegible]। इस नवोन्मेष डिजाइन ने सेंसर समर्पित क्लिनिंग कार द्वारा वॉशरूम की स्वचालित सफाई हेतु एक डिवाइस का प्रस्ताव भी दिया है। काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च ने इन बच्चों को 'सी.एस.आई.आर. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार' के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

पुरस्कार में दोनों विद्यार्थियों को प्रशस्ति–पत्र के साथ–साथ नकद राशि 50,000 रुपये प्रदान किए गए। विद्यालय की प्रचार्या श्रीमती प्रेम लता गर्ग ने उनकी इस अति विशिष्ट उपलब्धि पर बच्चों को बधाई दी एवं साथ ही भविष्य में और बेहतर करने के लिए शुभकामनाएँ भी दीं।

डी.ए.वी. स्कूल, फिल्लौर के प्रधानाचार्य को मिले प्रतिष्ठित पुरस्कार

डी.आर.वी. डी.ए.वी. सेण्टेनरी पब्लिक स्कूल, फिल्लौर के प्रधानाचार्य श्री योगेश गंभीर ने गत दिनों दो प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त कर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उपब्धियों को बढ़ाया। खबरें 'अभी तक' चैनल द्वारा प्रस्तुत केएटी आचार्य अलंकार अवार्ड, 2018 के अन्तर्गत श्री योगेश गंभीर को 'एक्सीलैंस इन लीडरशिप' अवार्ड प्रदान किया गया। उतर भारत से 49 अन्य प्रधानाचार्यों ने भी यह पुरस्कार प्राप्त किया। पुरस्कार वितरण समारोह एम.एम. काण्टीनेंटल मुलाना, अंबाला में आयोजित किया गया। पुरस्कार श्री राम बिलास शर्मा, शिक्षा मंत्री हरियाणा के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए।

दूसरी ओर रोटरी क्लब आफ मुंबई वेस्ट कोस्ट द्वारा आयोजित चौथे नेशन बिल्डर अवार्ड, 2018 के अन्तर्गत एक शिक्षाविद् के रूप में समाज में असाधारण योगदान के लिए तथा विद्यार्थियों के जीवन में स्थायी प्रभाव डालने के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती रंजू बाला ने भी हरियाणा के शिक्षा मंत्री के हाथों 'एक्सीलैंस इन टीचिंग' पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रधानाचार्य श्री गंभीर ने कहा कि निश्चित रूप से कार्य करते रहना अधिक महत्त्वपूर्ण है पर पुरस्कार व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ाते हैं तथा मनोबल ऊँचा करते हैं। उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. संस्था के साथ जुड़ कर काम करना अपने आप में विशेष है क्योंकि इसमें व्यक्ति को अपनी योग्यता को बढ़ाने के भरपूर अवसर प्राप्त होते हैं। उन्होंने अपनी टीम के सदस्यों के सहयोग का भी विशेष रूप से उल्लेख किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**